इकाई 12 कार्य शिक्षा की अवधारणा

टिप्पणी

संरचना

12.0 परिचय

12.1 अधिगम उद्देश्य

12.2 'कार्य' का अर्थ

12.2.1 कार्य और श्रम का महत्व

12.2.2 कार्य और आजीविका

12.2.3 कार्य और प्रसन्नता एवं संतुष्टि

12.3 कार्य एवं शिक्षा (Work in Education)

12.3.1 कार्य शिक्षा की अवधारणा एवं अर्थ

12.3.2 कार्य शिक्षा का महत्व

12.4 सारांश

12.5 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.6 अन्त्य इकाई अभ्यास

12.0 परिचय

''लिखाई–पढ़ाई की शिक्षा की पूजा करने की बात मुझे कभी नहीं जँची। मेरे अनुभव ने अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि मात्र लिखाई–पढ़ाई की शिक्षा से किसी की ऊँचाई तिल भर भी नहीं बढ़ती। शिक्षा से काम का जुड़ना बहुत बड़ी चीज़ है। मेरी तो राय है कि..... बच्चों को बचपन से ही परिश्रम का गौरव सिखाना चाहिए।.......... मेरा मत है कि बुद्धि की सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, आँख, कान, नाक आदि शरीर के अंगों के ठीक अभ्यास और शिक्षण से हो सकती है। दूसरे शब्दों में इन्द्रियों के बुद्धिपूर्वक उपयोग से बालक की बुद्धि के विकास का उत्तम और लघुत्तम मार्ग मिलता है।

महात्मा गाँधी

आपने संभवतया यह उक्ति सुनी अथवा पढ़ी होगी – ''सूर्योदय के साथ सारा जगत क्रियाशील हो जाता है।'' यद्यपि आज के दौर में इस उक्ति को कहा जाए तो इस प्रकार कहा जाएगा – ''दिन हो या रात सारा जगत सदैव क्रियाशील रहता है।''

इन दोनों उक्तियों में आप क्रियाषील भाब्द से क्या अर्थ निकाल रहे हैं? निश्चित रूप से

टिप्पणी

आपका संकेत किसी न किसी गतिविधि में संलग्नता से होगा अर्थात कार्य करने से होगा। किसी भी प्राणी के लिए चाहे वह मनुष्य हो अथवा जीव–जन्तु, कार्य विषेष रूप से शारीरिक श्रम एक अनिवार्य एवं आवश्यक गतिविधि है। दिन प्रतिदिन के जीवन में आप अपने परिवेष में लोगों को तरह–तरह के कार्यों को करते हुए देखते होगें और स्वयं को भिन्न–भिन्न प्रकार के कामों में सलंग्न करते होंगे। आखिर 'कार्य' से क्या तात्पर्य है? कार्य करना जीवन की आवश्यकता क्यों हैं? आइए, प्रस्तुत इकाई के माध्यम से इन प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से हम यह जानेंगे कि मानवीय जीवन के संदर्भ में कार्य का क्या अर्थ हैं? भौक्षिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने में 'कार्य' अर्थात मानवीय श्रम से जुड़ी गतिविधियाँ किस तरह मद्द करती है। यह इकाई इन बिंदुओं पर प्रकाश डालती है कि कार्य और शिक्षा का आपस में क्या जुड़ाव है, कार्य शिक्षा को किस रूप में परिभाषित किया जाता है। यह इकाई कार्य शिक्षा के उद्देश्य, महत्व एवं क्षेत्रों की समझ भी स्पष्ट करती है।

12.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के माध्यम से आप........

- भौक्षिक संदर्भ में 'कार्य' की अवधारणा के प्रति समझ बनाएगें।
- शारीरिक श्रम की महत्ता से परिचय प्राप्त करेंगे।
- कार्य व आजीविका, प्रसन्नता एवं संतुष्टि के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे।
- कार्य शिक्षा की आवश्यकता, अर्थ एवं महत्ता को चिन्हित कर सकेंगे।
- कार्य शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के प्रति समझ विकिसत करेंगे।
- कार्य शिक्षा के मौजदूा (वर्तमान) स्वरूप व उससे जुड़ी भ्रान्तियों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।

12.2 'कार्य' का अर्थ

अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में आप प्रातःकाल से सांयःकाल तक (कभी–2 रात्रि में भी) स्वयं को तरह–तरह की गतिविधियों में सलंग्न पाते हैं। कुछ गतिविधियों में आप पाएंगें कि आपका मस्तिष्क भिन्न–भिन्न इन्द्रियों के साथ क्रियाशील है, तो कुछ में आपके हाथ और पैर अधिक क्रियाशील है। जब आपका मस्तिष्क अधिक सक्रिय है तब आप इसे 'मानसिक कार्य' की संज्ञा देते है और जब आप हाथ पैरों से अधिक काम लेते है तब आप उसे

'शारीरिक कार्य' की संज्ञा देते है। दोनो ही प्रकार के कार्य आपके जीवन का अभिन्न अंग है क्योंकि जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए कार्य जरूरी है। भाायद आप यह सवाल करें कि क्या मस्तिष्क एवं हाथ–पैर पृथक–पृथक रूप से कार्य करते हैं? आप स्वंय विचार करें कि क्या जब आप किसी क्यारी में निराई–गुड़ाई कर रहे हैं तो क्या मात्र आपके हाथ–पैर ही क्रियाशील है अथवा कुछ इन्द्रियों के साथ–साथ मस्तिष्क भी क्रियाशील है? आपका उत्तर होगा कि आपका मस्तिष्क भी आपको कई तरह के संकेत दे रहा है पर प्रधानता हाथों के द्वारा अधिक क्रियाशील होने की है। निश्चित रूप से आपको अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया है कि शारीरिक व मानसिक कार्य पृथक–पृथक रूप से देखे जा सकते। शारीरिक कार्य में हाथ–पैरों का श्रम अधिक है जबकि मानसिक कार्य में मस्तिष्क का श्रम अधिक है। दोनों ही प्रकारों में सामाजिक मूल्य जुड़े हुए हैं।

सामान्य रूप से कार्य के बारे में धारणा है कि यह ऐसी गतिविधि है जिसमें शारीरिक श्रम लगता है। स्वयं के लिए अथवा समाज के लिए किसी तरह के उत्पादन की दिशा में किया गया शारीरिक श्रम 'कार्य' कहलाता है। श्रम से जुड़ी हमारी कुछ गतिविधियाँ भोजन, वस्त्र जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ी होती है, कुछ स्वयं हमारे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए होती है, कुछ गतिविधियों का संबंध सामाजिक आर्थिक जीवन में प्रशासन एवं व्यवस्था से है और अन्ततः सभी का संबंध मानवीय हित से है। इस प्रकार से काम का तात्पर्य शारीरिक श्रम से जुड़ी उन गतिविधियों से है जो स्वयं व समाज के अन्य लोगों के प्रति दायित्व का निर्वाह करती है।

12.2.1 कार्य और श्रम का महत्व

क्या आप जानते हैं कि सभी बड़े आविश्कार किस तरह हुए? शायद आपमें से कुछ कहें कि सभी बड़े–बड़े आविश्कार मानसिक चिंतन का परिणाम हैं। यदि आप किसी भी आविश्कार के विकास की प्रक्रिया पर गौर करें तो पाएगें कि मानसिक चिंतन से कहीं पहले शारीरिक श्रम उस आविश्कार से जुड़ा हुआ है। घिरनी का सिद्धांत प्रतिपादित करने वाले व्यक्ति ने अवश्य कभी न कभी कुएँ या ऐसे ही किसी स्थल से पानी भरा होगा या बोझा उठाया होगा। ऐसे ही उत्तोलक का सिद्धांत भी उस व्यक्ति के शारीरिक श्रम की उपज होगा जिसने अपने जीवन के बहुत से पल भारी–भारी सामान उठाने में लगाए होंगे या इसी प्रकृति का कोई अन्य शारीरिक श्रम किया होगा। हैंडपंप की रचना भी किसी कामगार के अनुभवों को साझा करने से ही हुई। शारीरिक श्रम के महत्व को प्रतिपादित करने का यह एक दृष्टिकोण है। श्रम के दूसरे दृष्टिकोण को समझने के लिए आप स्वयं की दिनचर्या पर दृष्टि डालें और स्वयं से कुछ प्रश्न करें जैसे –

- आप जिस घर में रहते हैं उसके निर्माण में किसका श्रम निहित है? उस घर में लगी ईंट को बनाने में, ईंट, सीमेंट आदि की ढुलाई में, दीवार खड़ी करने में, छत के लिए ढूला बनाने (लिंटर डालने) में, पुताई करने में किसका श्रम लगा होगा?

- भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनाज सब्जियाँ उगाने और उन्हें हम तक पहुँचाने में किसका श्रम निहित हैं?
- घर आँगन से लेकर सार्वजनिक स्थलों की सफ़ाई बनाए रखने में किनका श्रम संलग्न हैं?

व्यक्ति का पारिवारिक जीवन हो अथवा सामाजिक एवं व्यवसायिक, हर पहलू शारीरिक श्रम की परिधि से बाहर नहीं है। आप स्वयं देखेगें कि हमारी दिनचर्या के अनेक पल ऐसे हैं जहाँ शारीरिक श्रम को पृथक नहीं किया जा सकता अर्थात् मानवीय जीवन का संचालन शारीरिक श्रम पर ही निर्भर है। जो लोग सापेक्ष रूप से शारीरिक श्रम से नहीं जुड़े हुए हैं, उनका भी जीवन शारीरिक श्रम के बिना नहीं चल सकता। उनके रहने का निवास स्थल, उनके भोजन का प्रबंध, उनके द्वारा पहने गए वस्त्र, उनके द्वारा उपयोग में लाई जा रही वस्तुएँ, जिस सड़क पर वे चलते हैं आदि–आदि किसी न किसी व्यक्ति के शारीरिक श्रम का ही परिणाम है। कहने का तात्पर्य यह है कि कार्य और मानव जीवन को अलग रखकर नहीं देखा जा सकता। मानवीय जीवन के लिए शारीरिक श्रम का बहुत महत्व है, कुछ के लिए यह आजीविका का साधन है तो कुछ के लिए शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का माध्यम।

12.2.2 कार्य और आजीविका

कार्य और आजीविका का आपस में घनिश्ठ संबंध है। इस संबंध को समझने से पहले 'आजीविका' को परिभाशित करना जरूरी है। आप आजीविका को किस रूप में परिभाशित करते हैं? एक लुहार दिन भर श्रम करके फावड़े तैयार करता है और उन्हें बेचता है बदले में उसे धन मिलता है (पारंपरिक रूप देखें तो उसे धन की जगह अनाज इत्यादि जीवनोपयागी सामग्री मिलती थी।) एक किसान कड़ी मेहनत कर अनाज उगाता है। कुछ फसल वह स्वयं के परिवार के लिए रखता है व कुछ बेच देता है। शिल्पकार बाँस से तरह–तरह की सजावटी व उपयोगी वस्तुएँ बनाते हैं और उन्हें बेच कर अपने घर का खर्च चलाते हैं। रिक्शा चालक दिन भर धूप, सर्दी, बरसात हर तरह के मौसम में यात्रियों को उनके गंतव्य स्थान तक पहुँचाता है और बदले में धन प्राप्त करता है। जिससे अपने जीवन की आवश्यकताओं यथा भोजन आदि प्राप्त कर सके। ये सब उदाहरण किस ओर संकेत करते है।जी हाँ, आप सही दिशा की ओर संकेत कर रहे हैं। जीवनोपार्जन के उद्देश्य से श्रम में संलग्नता आजीविका कमाने का पर्याय है।

भारत जैसे देश की अधिकांश जनसंख्या कामगार है जिसे अपनी आजीविका के लिए शारीरिक श्रम को आवश्यक युक्ति के रूप में अपनाना होता है। धन की अपेक्षा में दूसरे के लिए किए जाने वाला श्रम आजीविका से जुड़ा है। इस श्रम का जहाँ एक ओर आर्थिक मूल्य है तो दूसरी ओर सामाजिक मूल्य भी है। क्या इस तथ्य को समझने के लिए आप कोई उदाहरण दे सकते हैं? मान लिया जाए कि आप बढ़ईगीरी का काम करते हैं। एक ओर तो आप इस कार्य के माध्यम से अपने घर की जरूरतें पूरा करने के लिए धन प्राप्त करते

टिप्पणी

है यह तो हुआ श्रम का आर्थिक मूल्य। दूसरी ओर आपके श्रम के माध्यम से समाज के बहुत से लोगों की दिन–प्रतिदिन की ज़रूरतें पूरी होती है जैसे – दरवाजों के चौखट, फर्नीचर, लकड़ी के उपकरण, बेलन, हाँडी आदि। यह आपके श्रम का सामाजिक मूल्य हुआ। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आप अपने श्रम के माध्यम से मात्र अपने प्रति दायित्व का निर्वाह नहीं कर रहे हैं अपितु समाज के प्रति भी दायित्व निभा रहे हैं और सार्वजनिक जीवन में योगदान दे रहे हैं। श्रम के जरिए समाज के लिए किया गया उत्पादन मानव जीवन को समृद्ध बनाता है। यहाँ एक और बात भी महत्वपूर्ण है कि घरेलू कार्यों यथा भोजन पकाना, सफाई करना, बर्तन माँजना, वस्त्रों की धुलाई इन सबमें भी श्रम निहित है। इस श्रम का सापेक्ष रूप से तो कोई मूल्य प्राप्त नहीं होता परन्तु परिवार के सदस्यों को सुविधा मिलती है और वे आजीविकोपार्जन के लिए ऊर्जा प्राप्त करते हैं। अतः घरेलू कार्यों के भी आर्थिक और सामाजिक मूल्य है।

12.2.3 कार्य और प्रसन्नता एवं संतुष्टि

आप अपने देश की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था से परिचित हैं ही। देश के अधिकांश लोग आजीविका हेतु श्रम से जुड़ते है। क्या वे केवल धन की अपेक्षा से ही कार्य करते हैं या वे किसी भी प्रकार के आनंद का भी अनुभव करते हैं। कुम्हार मिट्टी के सकोरे बना रहा है। वह सकोरों के आकार प्रकार में तरह–तरह के नमूने उकेर रहा है। क्या यह वह धन प्राप्ति की लालसा से कर रहा है। संभवतया उसे बहुत आनंद आ रहा है। अपने खेत में लहलाती हुई फसल देख कर किसान सिर्फ इसलिए प्रसन्न हो रहा है कि उसे इस फसल का मूल्य मिलेगा या फिर वह अपने श्रम के परिणाम पर मुग्ध है और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है कि न जाने कितने लोगों की क्षुधा पूर्ति करेगी यह फसल जो उसके अथक श्रम का परिणाम है। कहने का तात्पर्य यह है कि शारीरिक श्रम प्रसन्नता व संतुश्टि से भी जुड़ा हुआ है। शारीरिक श्रम प्रसन्नता, संतुश्टि और आनन्द के अनेक नए रास्ते खोलता है। और यह प्रसन्नता सभी जीव–जन्तुओं के साथ, हर आयु वर्ग के मनुश्य के साथ जुड़ी हुई है।

सूर्योदय के साथ ही चिड़ियों का दाना–चुगने के लिए उड़ान भरना, किसी भी अनापेक्षित स्थिति पर कुत्तों का चौकन्ना होकर भौंकना, कुछ पशुओं का शिकार पर निकल जाना यह सब कार्य प्राणी अपनी संतुष्टि के लिए कर रहे हैं। छोटे–छोटे बच्चे जिनकी सूक्ष्म व स्थूल माँसपेशियाँ अभी विकसित नहीं हुई हैं, वे भी अपने सामने जो भी वस्तु आए उसे पकड़कर उठा–पटक करते है और खुश होते हैं, उसी प्रकार के वृद्ध व्यक्ति जो अब शारीरिक ऊर्जा के संदर्भ में शिथिल पड़ चुके हैं, पर घर में आने जाने वाले पर निगरानी रखते है। बैठे–बैठे सब्जियाँ इत्यादि काट देते है, यह सब क्या वे दायित्व भर निभाने के लिए ही करते हैं अथवा अपनी संतुष्टि और प्रसन्नता के लिए करते हैं, इस तरह के बहुत से सवाल आपके मानस में भी उभरते होंगें। सब सवालों के उत्तर में आपको एक ही उत्तर मिलता होगा कि शारीरिक श्रम मात्र आजीविका कमाने या दायित्व भर निभाने के लिए नहीं किया जाता, यह आंतरिक प्रसन्नता व संतुष्टि के लिए भी किया जाता है। आपने 'श्रम दान' जैसे अभियानों के बारे में भी सुना होगा। आपने स्वयं भी कभी न कभी बिना किसी निजी हित के श्रम किया होगा। यह सब इसलिए क्योंकि शारीरिक श्रम शारीरिक व मानसिक स्वास्थय के लिए

आवश्यक है जो अन्ततः प्रसन्नता व संतुष्टि प्रदान करता है। श्रम व संतुष्टि के संबंध के प्रति आपकी समझ को और पुख्ता करने के लिए आपको एक निजी संस्था द्वारा संचालित विद्यालय का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में एक विद्यालय है जो निजी संस्था द्वारा संचालित है जिसे आम जन पब्लिक स्कूल के नाम से जानते हैं। इस विद्यालय में आम तौर पर धनाढय वर्ग के बच्चे आते हैं जिन्हें दिन–प्रतिदिन के जीवन में श्रम करने के अवसर नहीं मिलते। यहाँ कार्य शिक्षा के अंतर्गत आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने विद्यालय के बाहर ईटों के ढेर को साफ करने के लिए श्रमिकों की भाँति तसलों में ईंटें रखकर ढोयी। उन अभिभावकों के मन में तरह–तरह की शंकाएँ उठ रही थी कि हमारे बच्चों से इतनी मेहनत करवाई जा रही हैं कहीं वे बीमार न पड़ जाएँ या उन्हें किसी प्रकार का संक्रमण न हो जाएँ। पर विद्यार्थियों ने बताया कि ईटें ढोने के बाद वे मन और शरीर से बहुत हल्का महसूस कर रहें हैं और दिनों की अपेक्षा वे थके तो है किंतु किसी प्रकार के आंतरिक संतोष का अनुभव कर रहे हैं।

आपके उत्तर में आपकी समझ अन्तर्निहित है कि कार्य व प्रसन्नता और संतुश्टि घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

प्रगति जाँच-1

1. अपनी दिनचर्या में से कोई पांच ऐसे कार्य छाँट कर ऐसी सूची तैयार करें जिनमें शारीरिक श्रम निहित है।

   ....

   ....

   ....

2. शारीरिक श्रम की महत्ता को स्पश्ट करने के लिए कोई दो बिंदु सुझाइए।

   ....

   ....

   ....

3. उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें कि कार्य प्रसन्नता व संतुष्टि से कैसे जुड़ा हुआ है।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

रिक्त स्थानों की पूर्ति करे–

1. शारीरिक श्रम मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए .... है।
2. काम का तात्पर्य .... से जुड़ी उन गतिविधियों से है जो स्वयं एवं समाज के प्रति दायित्व का निर्वाह करती है।
3. .... के अनुभव वैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रतिपादन में सहायता करते है।

12.3 कार्य एवं शिक्षा (Work in Education)

''हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव लाना है। मस्तिष्क को हाथ के ज़रिए शिक्षित होना चाहिए। अगर मैं कवि होता तो पाँचों उंगलियों की संभावनाओं पर कविता लिखता। आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है और हाथ–पैर कुछ नहीं? जो लोग हाथ को प्रशिक्षित नहीं करते और सामान्य ढंग से शिक्षा पाते हैं, उनमें जीवन का संगीत नहीं होता। उनके शरीर का हर अंग प्रशिक्षित नहीं होता। सिर्फ किताबी ज्ञान बच्चे के भीतर इतनी जिज्ञासा नहीं जगा सकता कि उसका पूरा ध्यान उस पर केन्द्रित हो सके। सिर्फ़ शब्दों की शिक्षा से बच्चे का दिमाग थक जाएगा और भटकने लगेगा।''

– महात्मा गाँधी

(प्रशिक्षु अध्यापकों से बातचीत, हरिजन, 18 फरवरी 1939)

आपने गाँधी जी का उपर्युक्त कथन पढ़ा।

आप समझ रहे होंगे कि गांधी जी का संकेत किस ओर है? वे हाथ से किए गए काम को शिक्षा के अनिवार्य हिस्से के रूप में देखना चाहते हैं। काम केन्द्रित शिक्षा की अनुशंसा गांधी जी से पहले भी कई समाजवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों ने की और पश्चिमी देशों में तो काम केन्द्रित भौक्षिक कार्यक्रम भी चलाए गए। वास्तविकता यह है कि जीवन का भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उत्पादक काम मनुश्य का सबसे बड़ा शिक्षक है जिससे न केवल ज्ञानार्जन होता है बल्कि मनुष्य की क्षमता और मूल्यों का भी विकास होता है। कई भाोधों से यह बात सामने आई है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ काम का शिक्षा से जुड़ाव नहीं है, स्कूली शिक्षा लेने के बाद बड़ी संख्या में छात्र वास्तविक जीवन में असफल साबित होते हैं। यहाँ तक कि उन्हें ढंग से पुस्तकीय ज्ञान भी नहीं मिल पाता। भाोध यह भी बताते हैं कि काम से जुड़ा भौक्षिक अनुभव बच्चों के विकास में अधिक प्रभाव ाली और आलोचनात्मक होता है जिससे एक धर्मनिरपेक्ष और समतावादी और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण किया जा सकता है।

कार्य जो भारतीय समाज के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न रूपों में आज भी विद्यमान है, शिक्षा के साथ जुड़कर उसे प्रासंगिक और सार्थक बनाता है, साथ ही विद्यार्थियों को सामाजिक–सांस्क तिक संदर्भों से जोड़ता है। शिक्षा का वास्तविक एवं आदर्श दायित्व है

टिप्पणी

कि वह विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करे। इसके लिए जरूरी है कि भौक्षिक पाठ्यक्रमों में जीवन स्थितियों से जुड़े हुनर, दस्तकारी के कार्य व अन्य कार्य कौशलों को महत्वपूर्ण स्थान मिलें। शिक्षा द्वारा ऐसी योग्यताएँ पैदा की जाएँ जो बच्चों को दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के काबिल बनाएँ और सकारात्मक विकास के व्यवहार में सहायक हो। यह तभी संभव है जब विद्यार्थी सूचनाओं के किताबी दायरों से बाहर निकलकर कार्य की दुनिया में प्रवेश करेंगे।

काम से जुड़ाव बच्चों को उनके सामाजिक प्राक तिक परिवेश के निकट लाता है, प्राक तिक संसाधनों की पहचाान कराता है और भावी व्यवसायिक जीवन की तैयारी का भी काम करता है। काम के आधार पर हुई समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चों को सामाजिक रिश्तों के ताने–बाने में जोड़ती चलती है। भाायद आप इस बात पर विचार करे कि वे बच्चे जो सुविधापरक सामाजिक आर्थिक वर्ग से संबंध रखने के कारण काम की दुनिया से अपरिचित है, वे सहस्त्रों आवश्यक–अनावश्यक सूचनाओं के भंडार गृह व ज्ञाता तो हैं परन्तु उनका ज्ञान, कौशल व सामाजिक समझ तरह–तरह के काम करने वाले बच्चों की तुलना में कमतर है।

श्रम को संपूर्ण भौक्षिकचर्या में भाामिल करने से हर स्थिति विशेष में यह संभव है कि बच्चों को –

- सामुदायिक संसाधनों की अर्थपूर्ण जानकारी हो।
- गुणवत्ता परक जीवन जीने के हुनर सीखने को मिले।
- स्थिति विशेष को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने के कौशल विकसित हो।
- उपलब्ध स्थानीय अर्थव्यवस्था में ही अपने पैरों पर खड़े होने का मौका मिले।
- काम के साथ–साथ उच्च शिक्षा पूरी करने के अवसर भी मिले।
- मेहनत से किए गए कार्य पर गर्व करने की अनुभूति हो।
- विद्यालयी दिनचर्या में रचनात्मक बदलाव देखने को मिले।

जिन शिक्षायी व्यवस्थाओं ने श्रम के महत्व को स्वीकार नहीं किया है वे ऐसे बच्चे तैयार करते हैं जो खुद को अपने देश की बौद्धिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत से कटा पाते हैं। कार्यविहीन शिक्षायी पाठ्यचर्या बच्चों को दुनियाभर की विवेकहीन सूचनाओं से तो लैस कर सकती है परन्तु वास्तविक अर्थों में उन्हें सृजनशील जिम्मेदार नागरिक नहीं बना सकती।

12.3.1 कार्य शिक्षा की अवधारणा एवं अर्थ

हर देश में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना होता है

टिप्पणी

जो अपने नागरिकों को अपनी प्रतिभा और हुनर के विकास का मौका दे। जिनकी जरूरत उसे जीवन भर रहती है। इसके लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि शारीरिक श्रम को शिक्षा से जोड़ा जाए यानी कि कार्य शिक्षा को भौक्षिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जाए।

कार्य शिक्षा को उद्दे यपूर्ण और सार्थक शारीरिक श्रम माना गया है जो शिक्षण प्रक्रिया के अंतरंग भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। यह अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में परिकल्पित होता है जिसमें बच्चे आत्मसंतोश तथा आनंद का अनुभव साझा करते हैं। कार्य शिक्षा ज्ञान, समझ, व्यवहारिक कौशल और मूल्यपरक जीवन क्रियाओं को भौक्षिक गतिविधियों में सम्मिलित करने पर जोर देती है। कार्य शिक्षा की अवधारणा को निम्नलिखित घटकों में बेहतर रूप से समझा जा सकता है–

कार्य शिक्षा :-

- हाथ और मस्तिष्क में समायोजन स्थापित करती है,
- भौक्षिक क्रियाओं में अन्तर्निहित समाजोपयोगी शारीरिक श्रम हैं,
- सीखने की प्रक्रियाओं का अनिवार्य व महत्वपूर्ण घटक है,
- समुदाय के लिए उपयोगी सेवाओं अथवा उत्पादक कार्य के रूप में परिलक्षित होती है,
- बहुस्तरीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के हर चरण में आवश्यक घटक के रू‌प में जुड़ी हुई है,
- करने के द्वारा सीखने के सिद्धांत पर आधरित है।

कार्य शिक्षा में अन्तर्निहित कार्य-

- समस्या समाधान, समालोचनात्मक सोच, निर्णय लेना आदि कौशलों का विकास करते हैं,
- सभी विशयों से जुड़े शिक्षकों की भागीदारी आमंत्रित करते है,
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रूचियों व क्षमताओं पर आधारित होते हैं,
- शिक्षा के स्तरों (Stages) के अनुसार विद्यार्थियों की दक्षताओं में वृद्धि करते हैं,
- व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं,
- व्यवसायिक तत्परता तथा उत्पादन संबंधी कुशलता में वृद्धि व विकास करते हैं।
- विविध प्रकार की युक्तियों, तकनीकों, उपकरणों व पदार्थों के साथ अन्तःक्रिया के अवसर सुलभ कराते है।

- सामुदायिक सेवा संबंधी स्थितियों में अनुभव लेने के अवसर सुलभ करवाते हैं,
- कार्य जगत से परिचित करवाते है।

कार्य शिक्षा की सफलता के लिए जरूरी है–

- विचारों का खुलापन
- श्रम के प्रति आदर एवं सकारात्मक दृष्टिकोण
- समुदाय व विद्यालय के बीच सकारात्मक संबंध
- सहयोग की भावना
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक दृष्टिकोण

गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में

''सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए शिक्षा को शारीरिक श्रम से अलग नहीं किया जा सकता। ...... प्रत्येक विद्यार्थी को अपने विशिष्ट समुदाय के दायरे के बाहर विशाल व्यापक मानव समाज की सेवा के कुछ कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। कार्य को शिक्षा के माध्यम के रूप में लिया जाना चाहिए क्योंकि अनुभव हमारे मस्तिष्क की खिड़कियाँ हैं।''

उपर्युक्त विवरण के माध्यम से आप कार्य शिक्षा की अवधारणा व अर्थ से परिचित हो गए होगें। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कार्य शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण अर्थपूर्ण शारीरिक श्रमयुक्त गतिविधि है जो विद्यालयी पाठ्यचर्या के सभी सोपानों में सुनियोजित, सुगठित रूप से समायोजित होती है और उत्पादय अथवा सामाजिक सेवा के रूप में परिलक्षित होती है।

12.3.2 कार्य शिक्षा का महत्व

ब्रिटिश साम्राज्य से आजादी प्राप्त करने से पहले की बात है। सन् 1906 में इण्डियन नशेनल कांग्रेस ने दश के सम्मुख बच्चों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा का प्रश्न रखा। इस प्रश्न का उत्तर एक ऐसी शिक्षा नीति में था जिसके द्वारा राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जा सके, राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के रास्ते पर चला जा सके, जो समाज की जरूरतों को बुनियादी तौर पर समझकर पूरा करने की ओर प्रवृत्त हो साथ ही जिसके द्वारा साहित्य, विज्ञान, कला और तकनीक सभी के विकास के लिए संभावनाएँ हों। ऐसी शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना की गई जिसके द्वारा टुकड़े–टुकड़े होते हुए समाज को जोड़ा जा सके, बिखरते हुए मूल्यों को वि वास की माला में पुनः पिरोया जा सकते और कार्य तथा शिक्षा के बीच की खाई को पाटा जा सके।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए कार्य शिक्षा को महती अनिवार्यता के रूप में देखा गया। कार्य शिक्षा की महत्ता को निम्नलिखित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है –

टिप्पणी

1. बच्चों में अपने शरीर की प्राकृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियमित आदतों और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

2. अपने आसपास के परिवेश के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता उत्पन्न करना तथा मानव जाति और पर्यावरण के अन्तःसंबंध के प्रति समझ विकसित होती है।

3. शारीरिक कार्य और श्रम के महत्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है।

4. सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों का विकास करने में मदद मिलती है।

   नियमितता, समय की पाबंदी, स्वच्छता, आत्मनियंत्रण, परिश्रमशीलता, कर्त्तव्यबोध, सेवा भावना, उत्तरदायित्व की भावना, उद्यमशीलता, समानता के प्रति संवेदनशीलता भाई चारे की भावना, इन सभी गुणों का विकास मात्र किताबें पढ़ने या प्रवचन सुनने से नहीं होता बल्कि जब विद्यार्थी मिलजुल कर भिन्न–भिन्न प्रकार के कार्यकलाप करते हैं। तब स्वतः उनके अंदर सामाजिक रूप से वांछनीय गुण पल्लवित होते हैं।

5. कार्य शिक्षा के माध्यम से पोशण, आहार, संक्रामक रोग, स्वच्छता संबंधी नियमों की जानकारी मिलती है। कार्य के जरिए वे सामुदायिक स्वच्छता बनाए रखने के प्रति सचेत व सजग होते हैं।

6. स्वअभिव्यक्ति और रचनात्मकता के गुण का पोशण – प्रत्येक बच्चे में स जन की पर्याप्त संभावनाएँ होती हैं और कलात्मक अभिव्यक्ति उसका स्वाभाविक लक्षण है। कार्य शिक्षा कलात्मक कार्यकलापों का आयोजन करके व्यक्तिगत आधार पर आत्म अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है।

7. सांस्कृतिक विरासत स्थानीय व राष्ट्रीय दोनों की सराहना करने की क्षमता तथा संरक्षण की भावना को पोशित करती है।

8. नेतृत्व की भावना व नेतृत्व कौशल को प्रस्फुटित करने में सहायता करती है। कुछ बच्चे स्वभावतः अन्तर्मुखी होते हैं, पहल करने से झिझकते हैं। कार्य, शिक्षा बच्चों को इस तरह के अनुभव प्रदान करती है जिससे सरल से कार्यकलापों के द्वारा उनमें नेत त्व कौशल को विकसित व पोशित किया जा सके।

9. आवश्यक जीवन कौशलों का विकास–शिक्षा का वास्तविक एवं आदर्श दायित्व है कि वह बच्चों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करे। कार्य शिक्षा विद्यार्थी में आवश्यक जीवन कौशलों यथा–समस्या समाधान, निर्णय लेना, सृजनात्मक सोच, समालोचनात्मक सोच, तदानुभूति, प्रभावी संप्रेशण, स्वयं की पहचान जैसे कौशलों का विकास करने में मदद करती है और बच्चों को दैनिक जीवन की मांगो और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निबटने के योग्य बनाती है।

10. कार्य जगत से शिक्षा की सम्बद्धता स्थापित करना – कार्य शिक्षा समुदाय की विभिन्न कार्य परिस्थितियों को जानने और उनमें हिस्सा लेने के अवसर प्रदान करती है। काम

टिप्पणी

तथा कामगारों की दिनचर्या को जानने के लिए प्रेरित करती है। समाज की उत्पादक गतिविधियों में भाग लेने के लिए भी प्रेरित करती है।

11. स्कूल व समुदाय में जुड़ाव–

सम्पूर्ण विद्यालयी कार्यक्रम में सम्भवतयाः कार्यशिक्षा एक ऐसा विशय है जो प्रभावशाली तरीके से विद्यालय को समुदाय के निकट लाता है। कार्यशिक्षा समुदाय की सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि का हर स्थिति में ध्यान रखती हैं। समुदाय के दस्तकारों को उनकी कला व हुनर के प्रदर्शन के लिए आमंत्रित करती है।

12.4 सारांश

सभी बच्चों, चाहे वे किसी भी सामाजिक, आर्थिक, सांस्क तिक पृष्ठभूमि के हों, की शिक्षा में 'कार्य' का शिक्षणभाास्त्रीय महत्व है। जिस शिक्षा व्यवस्था में काम व ज्ञान, पृथक–2 रास्ते पर चलने का प्रयास करते हैं, उस शिक्षा व्यवस्था का समाज से कभी जुड़ाव नहीं बन पाता बल्कि शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं और समाज के बीच एक गहरी खाई खुदती जाती है। संभवतयाः यही एक कारण है कि शिक्षा और कार्य के बीच जुड़ाव न होने से बच्चों में आवश्यक जीवन कौशलों का सर्वथा अभाव रहता है। विद्यालयी पाठ्यचर्या में शारीरिक श्रम व उत्पादन संबंधी कार्य को महत्वपूर्ण स्थान पर रखने का तात्पर्य है, शिक्षा को सार्थक, तर्कसंगत व जीवनोपयोगी बनाना। वास्तविक जीवन की स्थिति से जुड़े उत्पादन संबंधी कामों में विद्यार्थियों की संलग्नता का 'सीखने' की प्रक्रिया में शिक्षण शास्त्रीय महत्व तो है ही, साथ ही तरह–तरह के ज्ञान की प्राप्ति, मूल्यों व जीवन कौशलों का विकास भी स्वाभाविक रूप से होता चलता है। शिक्षा व कार्य के जुड़ाव के साथ–साथ आपने जाना कि ज्ञान, कौशल व मूल्यों के संदर्भ में कार्य शिक्षा के क्या उद्दे य है। कार्य शिक्षा का मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आधार है। यह विद्यार्थी को आनंद भी प्रदान करता है। मात्र पुस्तकीय ज्ञान बच्चों में शिक्षा के प्रति अरूचि पैदा करता है, जबकि हस्तकार्यों से संलग्नता उनमें जीवन्तता, उत्साह व उमंग पैदा करती है।

कार्य शिक्षा के उद्देश्य बच्चों को अपनी, अपने परिवार व समुदाय की आवश्यकताएँ जानने के लिए उत्साहित करते हैं। श्रम के महत्व व श्रमजीवियों के प्रति सम्मान की भावना विद्यार्थियों में विकसित कर पाना कार्य शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्दे य है।

12.5 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. गांधी, एम. के. (1953) नयी शिक्षा की ओर, नवजीवन पब्लि ंग हाउस, अहमदाबाद।

2. भारत सरकार (1986) शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 1986 और कदम उठाए जाने हेतु कार्यक्रम 1986 मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली।

3. गुजरात नई तालीम संघ (2000–2002), नई तालीम संघ, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

4. राष्ट्रीय भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद्, नई दिल्ली (1975), दस वर्शीय विद्यालय हेतु पाठ्यक्रम एक रूपरेखा नई दिल्ली

12.6 अन्त्य इकाई अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें–

1. बच्चों में सामाजिक रूप से वांछनीय गुणों का विकास करने के लिए शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर आप किस विशय की अनुशंसा करेगें। तर्क सहित उत्तर दें।
2. कार्य शिक्षा के संदर्भ में 'श्रम' का क्या अर्थ है? श्रम प्रधान एवं हस्तकार्य से जुड़ी गतिविधियों की शिक्षा में क्या सार्थकता है?
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 कार्य शिक्षा को किस रूप में रेखांकित करती है। विद्यालयी शिक्षा के लिए उसे क्यों महत्वपूर्ण बताया गया है?
4. ज्ञान एवं समझ तथा कौशलों के विकास के संदर्भ में कार्य शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
5. कार्य शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न एवं अनिवार्य घटक स्वीकार करने के संदर्भ में इसके सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आधारों की उदाहरण के साथ व्याख्या करें।
6. वर्तमान विद्यालयी शिक्षा किन कारणों के रहते 'कार्य शिक्षा' को अपेक्षित स्थान एवं समय नहीं दे पाती। उदाहरण के साथ उत्तर दें।
7. कार्य शिक्षा को लेकर अभिभावकों एवं बच्चों में किस तरह की भ्रान्तियाँ व्याप्त हैं? उन्हें दूर करने के लिए आप क्या प्रयास करेंगे?

टिप्पणी

इकाई 13 कार्य शिक्षा का क्रियान्वयन (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्ष)

संरचना

13.0 परिचय

13.1 अधिगम उद्देश्य

13.2 कार्य शिक्षा की विषय वस्तु

13.2.1 सामग्री, औजारों तथा प्राविधियों से प्रयोग

13.2.2 कार्य अभ्यास

13.3 विद्यार्थियों का समूहीकरण

13.3.1 समय निर्धारण

13.3.2 स्थान का निर्धारण

13.4 भिन्न–भिन्न कक्षाओं हेतु कार्य शिक्षा के सत्रों की योजना

13.4.1 मूल भूत जरूरतों की श्रेष्ठतर पूर्ति से जुड़े कार्यकलाप

13.4.2 परिवेश के सौन्दर्यीकरण से संबंधित कार्यकलाप

13.4.3 सामुदायिक सेवा से संबंधित कार्यकलाप

13.4.4 सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय एकता से संबंधित कार्यकलाप

13.4.5 पर्यावरण जागरूकता से संबंधित कार्यकलाप

13.5 प्रारंभिक कक्षाओं के संदर्भ में कार्य शिक्षा के लिए सामग्री का चयन एवं संयोजन

13.6 सामग्री एवं उपकरणों का भंडारण एवं प्रबंधन

13.7 विभिन्न पाठ्यचर्यक विषयों से जुड़ाव एवं अनुभव देने की पद्धतियां

13.7.1 भाषा

13.7.2 गणित

13.7.3 पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक ज्ञान इतिहास आदि

13.8 कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों के लिए सीखने सिखाने की पद्धतियाँ

13.8.1 अवलोकन/निरीक्षण विधि

13.8.2 प्रदर्शन विधि

13.8.3 प्रयोगात्मक विधि

13.8.4 योजना पद्धति

13.8.5 भ्रमण विधि

13.9 सारांश

13.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

13.0 परिचय

पिछली इकाई के माध्यम से आपने कार्य शिक्षा की अवधारणा और प्रकृति के बारे में समझ प्राप्त की। आपने जाना कि 'कार्य' का तात्पर्य ऐसी गतिविधि से है जिसमें 'श्रम' निहित है। शिक्षा में 'शारीरिक श्रम' को आज से नहीं अपितु औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के आविर्भाव से पहले ही एक महत्वपूर्ण उपकरण व तकनीक के रूप में स्थापित किया गया था। प्राचीन भारत में जब विषय अपने गुरू के साथ आश्रम में ही रहते थे, वे जीवन जीने के लिए तथा सीखने के लिए हर तरह के श्रम निहित कार्य करते थे। कार्य और शिक्षा में किसी तरह का विरोधाभास नहीं था। औपचारिक विद्यालयी शिक्षा की शुरूआत शिक्षा के कार्य निहित स्वरूप को पुस्तकीय ज्ञान की परिधि की ओर लाती गई। 1854 में वुड शिक्षा डिस्पैच द्वारा इस कमी की ओर संकेत किया गया। 1937 में वुड और डाबोट द्वारा बच्चे के व्यक्तित्व के संतुलित विकास के लिए शिक्षा में शारीरिक श्रम से जुड़ी गतिविधियों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

पहली इकाई द्वारा आपने इन तथ्यों को जाना। आपने यह भी जाना कि कार्य का शिक्षण शास्त्रीय महत्व क्या है और वर्तमान शैक्षिक परिदृश्यों में 'कार्य शिक्षा' के क्या उद्देश्य है। प्रस्तुत इकाई में कार्य शिक्षा के क्रियान्वयन संबंधी तत्वों की जानकारी प्राप्त करेंगे। कार्य शिक्षा की विषयवस्तु क्या होगी, किन युक्तियों द्वारा उस विषयवस्तु को संप्रेि ात किया जाएगा, गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों का सामूहीकरण किस तरह से किया जाएगा, ये सभी प्रमुख तत्व प्रस्तुत इकाई द्वारा स्पष्ट किए जा रहे है।

13.1 अधिगम उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. कार्य शिक्षा की विषयवस्तु क्या है और दूसरे विषयों की विषयवस्तु में किस प्रकार से समन्वयन किया जा सकता है, यह समझ स्थापित करना,

2. कार्य शिक्षा के लिए संस्थान/विद्यालय में किस प्रकार के उपकरण व सामग्री की आवश्यकता होगी, की जानकारी देना।

टिप्पणी

3. कार्य शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु विद्यार्थियों के समूहीकरण की प्रक्रिया का परिचय देना,

4. भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्यकलापों का चयन करने की क्षमता विकसित करना।

5. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत बनाई गई सामग्री के भंडारण के रखरखाव की आवश्यकता व विधियों के प्रति समझ बनाना,

6. अन्य पाठ्यचर्यक विषयों के साथ जोड़ने की आवश्यकता के प्रति समझ बनाने व एकीकृत करने की दक्षता प्राप्त करना,

13.2 कार्य शिक्षा की विषय वस्तु

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अभिधारणा की संपुष्टि की और इसे सोद्देश्य व सारगर्भित शारीरिक कार्य के रूप में परिकल्पित किया। शिक्षा के सभी स्तरों पर इसे एक अनिवार्य घटक माना गया जिसका प्रावधान सुगठित और क्रमबद्ध कार्यक्रम के रूप में किया जाना चाहिए – ऐसी सिफारिश की गई। मुख्यतः छः क्षेत्र सुझाए गए जहां से उत्पादक शारीरिक श्रम की परिस्थितियों को लेना चाहिए– स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञान, आहार एवं पोषण, आवास, परिधान, संस्कृति एवं मनोरंजन तथा समुदायिक कार्य व समाज सेवा।

कार्य शिक्षा की विषय वस्तु के संदर्भ में सोच विचार करने से पहले कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को मद्देनजर रखना अनिवार्य है। यह स्पष्ट है कि कार्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अनिवार्य जीवन कौशलों का विकास किया जाता है तो जाहिर सी बात है कि कार्य शिक्षा की विषय वस्तु का ताना–बाना रोजमर्रा की जिन्दगी के इर्द–गिर्द ही बुना गया होगा या बुना जाना चाहिए। इस विषय के अन्तर्गत करवाए जाने वाले कार्यकलाप मुख्यतः छः क्षेत्रों से लिए जाते हैं –

स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञान, आहार एवं पोषण, आवास, परिधान, संस्कृति एवं मनोरंजन तथा समुदायिक कार्य व समाज सेवा। ये छहों क्षेत्र किसी भी व्यक्ति की जिंदगी के अनिवार्य घटक हैं अतः कार्य शिक्षा की विषय वस्तु इनसे अलग नहीं हो सकती। कार्य शिक्षा की विषय वस्तु का आसपास की परिस्थितियों से संबंध होना अनिवार्य है।

प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर विषय वस्तु के मुख्यतः तीन घटक होंगे – पर्यावरण अध्ययन और उपयोग, सामग्री, औजार, तथा प्राविधियों से प्रयोग और तीसरा कार्य अभ्यास। तीनों घटक बच्चों उनके परिवारों तथा समाज की रोजमर्रा की आवश्कता पूर्ति की जाने वाली क्रियाओं के इर्द–गिर्द से ही लिए जाएंगे। उत्पादक कार्य और आसपास के प्रति की जाने वाली सेवाओं में 'कार्य अभ्यास' बहुत ही महत्वपूर्ण है। मात्र एक बार कर लेने से यह निणर्य नहीं ले सकते कि बच्चे सब कुछ भली भांति जान गए हैं या निपुर्ण हो गए हैं।

कार्य शिक्षा की क्रियाओं/परियोजनाओं का वास्तविक चयन स्थान विशेष में उपलब्ध, प्राकृतिक, भौतिक और मानव संसाधनों और समाज विशेष की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि पर निर्भर हो। क्रियाओं और परियोजनाओं के चयन में विविधता हो। पर्यावरण विषयक क्रियाएं इस प्रकार हैं–

1. घर से विद्यालय अथा अन्य किसी स्थान पर आते–जाते रास्ते में आने वाली वस्तुओं जैसे मकान, पेड़–पौधे, खम्भों, दुकानों (जो कुछ भी हो) आदि का अवलोकन करना। इससे हम अपनों के प्रति संवेदनाशील बनते हैं, उसके साथ एक आत्मीय संबंध करते हैं।

2. पर्यावरण स्वच्छता के कार्यक्रमों में अपनों से बड़ों का हाथ बंटाना– जैसे: पास–पड़ोस के पार्क में बिखरी पॉली पैक की थैलियों या दूसरे प्रकार के कचरे को उठाना, ठहरे हुए पानी के निकास का प्रबंध करना, खरपतवार निकालना, आवारा घूमते पशुओं के लिए उत्तरदायी संस्था को सूचना देना आदि।

3. घर तथा आसपास चल रही कार्य व उत्पादन प्रक्रियाओं का अवलोकन जैसे घर में खाना बनते हुए देखना (सुविधानुसार हाथ भी बँटाना) दर्जी की दुकान, कुम्हार का चॉक पर बर्तन, घड़े बनाना, चिनाई का काम, पुताई का काम, रंगाई का काम, माल ढुलाई का काम, नाई का काम आदि।

4. अपने जूतों पर पॉलिश करना, रिबन, मोजे, रूमाल, अन्तःवस्त्र की धुलाई करना, अपने बस्ते की सफाई करना, बटन टाँकना आदि।

5. घर–विद्यालय के पौधों को नियमपूर्वक पानी देना, खरपतवार निकालना एवं अन्य प्रकार की आवश्यक क्रिया करना।

6. उद्यान एवं खेतों में फसलों का अवलोकन, कार्य प्रक्रिया का अवलोकन, संबंधित सवाल पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत करना।

7. आसपास के पेड़–पौधों के नामों और उपयोगिता से परिचित होना। उनकी देखभाल के लिए तत्पर रहना।

8. डाकघर, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन, अस्पताल, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, मवेशी खाना आदि में चल रही कार्य प्रक्रिया का अवलोकन करना।

9. सांस्कृतिक व धार्मिक पर्वों पर होने वाले आयोजनों व कार्यकलापों का अवलोकन करना आवश्यकतानुसार उन कार्यकलापों में हिस्सा लेना।

टिप्पणी

प्रगति जाँच -2

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधियों का चयन करने के लिए किन प्रमुख छः क्षेत्रों को आधार बनाएगें ?

....

....

....

2. नीचे दिए गए कथनों में सही कथनों पर निशान लगाएँ –

- आस–पास के परिवेश का उद्देश्यपूर्ण अवलोकन करना संवेदनशीलता को बढ़ाता है।
- विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर बच्चों को बागवानी संबंधित कार्यकलापों में संलग्न नहीं करना चाहिए।
- सांस्कृतिक व धार्मिक पर्वों पर होने वाले आयोजनों में विद्यार्थियों की सहभागिता कार्य शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- अपने जूतों पर पॉलिश करना, अपने बस्ते की सफाई करना आदि कार्य, कार्य शिक्षा में शामिल नहीं किए जाने चाहिए।

13.2.1 सामग्री, औजारों तथा प्राविधायों से प्रयोग

मानव की दिन–प्रतिदिन की जिंदगी से जुड़ा छोटे से छोटा कार्य हो अथवा कोई बहुत बड़ा उद्योग, प्रत्येक कार्य के लिए औजारों, सामग्री की और तकनीक की जरूरत होती है। कार्य शिक्षा की विषय वस्तु विद्यार्थियों को दैनिक जीवन के कार्यकलापों की पूर्ति हेतु काम में आने वाले उपकरणों और सामग्री तथा तकनीक से परिचित करवाती है और अनुभव करने के अवसर भी प्रदान करती है जिससे विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर की दक्षता का विकास हो सके। नीचे कुछ ऐसी क्रियाओं की सूची दी जा रही है –

1. खेलने की विविध सामग्रियों से परिचय।
2. मिट्टी, पुराने कागज, पुराने अखबार बाँस, पत्ते, कपास, कपड़े की पुरानी कतरनें आदि से परिचय व उनसे खेलने अथवा काम की वस्तुएं बनाना आना।
3. रसोई घर तथा घर में उपयोग आने वाले उपकरणों से परिचय क्षमतानुसार उनका उपयोग जानना व उपयोग करना।
4. सफाई और कपड़ों की धुलाई से काम आने वाले उपकरण व सामग्री जैसे– थपकी, ब्रुश, मशीन, बाल्टी, साबुन, डिटर्जेंट पाउडर आदि से परिचय व क्षमतानुसार उनका उपयोग करना आना।

5. पुष्प सज्जा, फूल पत्तों की माला गूँथना, गुलदस्ते बनाना।
6. भिन्न–भिन्न धातुओं की पहचान और उनका कहां–कहां उपयोग होता है, इसकी जानकारी रखना।
7. कलात्मक वस्तुएँ तैयार करने, ड्राइंग करने से जुड़ी वस्तुओं और उपकरणों के साथ क्रिया करना।

13.3.2 कार्य अभ्यास

कार्य अभ्यास से तात्पर्य है स्वयं कार्य करके अनुभव लेना, काम को सीखना। इस तरह से बच्चे को न केवल व्यापक जानकारी हासिल करने के मौके प्राप्त होते हैं बल्कि ऐसी परिस्थितियों में काम करने के मौके भी मिलते हैं जहां वह बहुत कुछ सीख सकें, सीखने का रस ले सकें, अपनी शंकाओं का समाधान कर सकें, अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर सकें और घर, परिवार, विद्यालय व समुदाय की विभिन्न कार्य परिस्थितियों की जानकारी ले सकें।

कार्य अभ्यास के लिए दी जाने वाली क्रियाएं इस प्रकार की हों कि जिनके द्वारा बच्चों में आत्म विश्वास व आत्मनिर्भता जैसे गुण पनप सकें, उनमें समाज के रचनात्मक कार्यकलापों में खुशी के साथ हिस्सा लेने की ललक हो। उन्हें स्वच्छ वातावरण व सौंदर्यीकरण कार्यक्रमों से जुड़ने का मौका मिलना चाहिए। काम तथा कामगारों के प्रति सम्मानजनक रवैया अपना सकें।

कार्य परिस्थितियों की विस्त त जानकारी आसपास के माहौल के अध्ययन और उत्पादक क्रियाकलापों में हिस्सेदारी के अनुभवों से बच्चे के अंदर घटनाओं और अपने तथा आसपास के महौल को जानने की इच्छा बलवती होती है।

क्रियाकलाप–1

कागज पर तरह–तरह के नमूने बनाना–स्याही व रंगों से डिजाइन, धागों से डिजाइन, मारबल पेपर बनाना।

- बधाई–पत्र, बुक मार्कर, विभिन्न देशों के राष्ट्रध्वज, झंडियां, मालाएं, लिफाफे बनाना, कागज से तरह–तरह की आकृतियां, वस्तुएं जैसे नाव, दिन–रात आदि बनाना।
- मिट्टी के खिलौने बनाना।
- पत्तियां, शंख, सीपियां, फूल बीज, पंख एकत्र करना।
- पेय–पदार्थ–चाय, काफी, नींबू पानी, शर्बत आदि बनाना।
- अपनी किताबों पर जिल्द चढ़ाना।

टिप्पणी

- अपने तथा परिवार के लिए छोटी–मोटी खरीददारी करना।
- अपने छोटे भाई–बहन की देखभाल में माता–पिता की मदद करना, उनकी पढ़ाई में मदद करना।
- पेड़–पौधों की देखभाल करना।
- विद्यालय में स्वच्छता बनाए रखने संबंधी काम।

प्रगति जाँच -3

1. कार्य अभ्यास के अन्तर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियों के कोई मुख्य दो आधार लिखें।

....

....

....

2. उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए कोई पांच ऐसे कार्यकलाप सुझाएं जो दैनिक जीवन के लिए उपयोगी हो।

....

....

....

13.3 विद्यार्थियों का समूहीकरण

संम्भवतः आपने यह देखा होगा कि जब विद्यार्थी अपने विचारों एवं कल्पनाओं को एक आकार प्रदान करते हैं, तब वे खुशी का अनुभव करते हैं और जब वे समूहों में कार्य करते हैं तब–

- उनके अधिगम प्रक्रिया द्वारा प्राप्त आनंद की अनुभूति में सकारात्मक व   द्धि होती है;
- वे समूह भावना का विकास करते हैं;
- वे एक–दूसरे से सीखने और सिखाने का कौशल करते हैं;
- सहयोग, नेतृत्व जैसे गुणों का स्वतः विकास होता है।

कार्य शिक्षा के अधिकांश कार्यकलापों की प्रकृति मुख्यतः इस प्रकार की होती है कि उन्हें यदि समूह में करवाया जाए तो बेहतर परिणामों की प्राप्ति सम्भव है। दृष्टिकोण निर्माण सं

संबन्धित गुण, मूल्य व कौशल और कुछ अन्य सामाजिक मूल्य जैसे–एक –दूसरे के प्रति व परिवेश के प्रति संवेदनशीलता, परानुभूति, सहयोग, अन्तःनिर्भरता के प्रति समझ, प्रकृति प्रेम, सौन्दर्यानुभूति, श्रम का महत्व, नियमितता आदि समूह में कार्य करने अधिक मुखरित रूप से विकसित होते हैं। समूहों में काम करने से एक 'सांझी संस्कृति' का माहौल भी विकसित होता है।

उपरोक्त सकारात्मक पक्ष तभी उभर सकते हैं जब आपने योजनाबद्ध तरीके से विद्यार्थियों के समूहों का निर्माण किया हो। समूह निर्माण हेतु आप कुछ विशेष बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहेंगे–

- क्या आप एक ही कक्षा के भिन्न–भिन्न समूह बना रहे हैं या दो–तीन कक्षाओं को मिलाकर विद्यार्थियों के समूह बना रहे हैं?

कार्यकलाप विशेष के उद्देश्यों को दृष्टिगत करते हैं दोनों ही स्थितियाँ आपके सामने होंगी। कुछ कार्यकलापों के लिए आप कक्षानुसार समूह बनवाएँगे और कुछ कार्यकलापों के लिए भिन्न–भिन्न कक्षाओं के मिले–जुले समूह। जैसे बालसभा, प्रातःकालीन सभा के आयोजन के लिए सभी कक्षाओं के विद्याार्थियों की भागीदारी। दोनों ही स्थितियों में आप विचार करें–

- सहशिक्षा होने पर मिला–जुला समूह बनाए;
- शारीरिक चुनौती वाले बच्चों का पृथक समूह न बनाकर और बच्चों के समूह के साथ जोड़े और यह भी सुनिश्चित करें कि वहां उन्हें कोई अर्थपूर्ण भूमिका और उत्तरदायित्व दिया जाए;

सभी कुशाग्र व तीव्र गति से सीखने वाले बच्चों को एक साथ न रखें। कहने का तात्पर्य यह है कि मंद गति से सीखने वाले बच्चों व मेधावी बच्चों का मिला–जुला समूह बने। ऐसे समूहों के निर्माण से आपका उत्तरदायित्व आरम्भ में कुछ बढ़ जाएगा। आपको सतत् रूप से इस बात का अवलोकन करना है कि मेधावी/अधिक वय वाले /तीव्र गति से सीखने की क्षमता रखने वाले बच्चे दूसरे बच्चों को दबाए नहीं, उनकी बराबर की भागीदारी ले, उन्हें भी निणर्य लेने के अवसर दें, उनके निर्णयों व सुझावों को सुना जाए, समझा जाए और आवश्यकतानुसार क्रियान्वयन भी किया जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि समूहों में प्रजातान्त्रिक माहौल बनें, इसके लिए आरम्भ में आप की ओर से अधिक समय निवेश करने की मांग उत्पन्न होती है।

- आपके समूह निर्माण की प्रक्रिया को कुछ और घटक भी प्रभावित करेंगे–
- स्थान की उपलब्धता
- संसाधनों–सामग्री व उपकरण, औजार आदि की पर्याप्तता;
- समय की उपलब्धता;
- पर्यवेक्षण व मूल्यांकन की व्यवस्था;

टिप्पणी

- विद्यार्थियों की संख्या;
- कार्यकलाप की प्रकृति एवं निहित उद्देश्य;
- अनेक बार विद्यार्थियों की रुचि, पूर्व अर्जित ज्ञान व प्रारम्भिक प्रवेश व्यवहार को भी ध्यान में रखकर समूह निर्माण किया जाता है।

प्रारम्भिक प्रवेश व्यवहार के स्तर से हमारा तात्पर्य है– कार्यकलाप करने से पहले उसका कार्य की प्रकृति से जुड़ा पूर्व ज्ञान व समझ। बहुत से बच्चें को घर पर ही ऐसा वातावरण मिलता है जहां उन्हें इच्छावश अथवा किसी विवशता के रहते बहुत सी उत्पादक प्रक्रियाओं में जुड़ना पड़ता है, या फिर दैनिक कार्यकलापों में एक निश्चित भूमिका निभानी होती है। आपकी कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे भी होंगे जिन्हें घर के कार्यकलापों में भाग लेने के अवसर न मिलते हों, जिनके निज के कार्यकलाप माता–पिता के सहयोग से पूरे होते हों। दोनों प्रकार के बच्चों के प्रारंभिक व्यवहार के स्तरों में भिन्नता होगी। एक को प्रदत्त कार्यकलाप से जुड़े ज्ञान, तकनीकियों सामग्री की आधी/पूरी समझ हो सकती हैं और दूसरे को जरा भी अनुभव नहीं होगा। इस स्थिति में आपके समूह की संरचना का क्या आधार होगा? क्या आप मिला–जुला समूह मिश्रित योग्यता वाला बनवाएंगे अन्यथा पृथक–पृथक समूह की रचना करेंगे ? पृथक समूह बनाने से आपको क्या नुकसान हो सकता है ? मिले–जुले अर्थात् बहुश्रेणी व मिश्रित योग्यता वाले बच्चों को लेकर समूह बनाने से आपका उत्तरदायित्व किस स्तर पर कितना बढ़ जायेगा ? आशा है सभी प्रश्नों पर भली–भांति विचार करके ही आप समूहों की रचना करेंगे। यह आवश्यक नहीं कि एक कार्यकलाप विशेष के लिए बनाए समूह या सत्र के आरम्भ मे बनाए गए समह 'स्थायी' रहेंगे। आप समय–समय पर समूहों के गठन में परिवर्तन भी कर सकते हैं। परिवर्तन के लिए आपके पास जरूर कुछ आधार होंगे। जैसे–

- पिछले समूहों की कार्य प्रणाली;
- नई परिस्थितियाँ;
- कार्यकलाप की प्रक ति में बदलाव;
- आपके द्वारा नवाचार करने की चेष्टा।

विद्यार्थियों के पूर्व निर्मित समूहों में परिवर्तन करके आप अपनी जिम्मेदारियों को बढ़ा तो अवश्य दे रहे हैं पर अपने विषय के प्रति आपकी सजगता व ईमानदारी का परिचय भी दे रहे हैं।

प्रगति जाँच - 4

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत कार्यकलापों के क्रियान्वयन हेतु समूह बनाना क्यों आवश्यक है ?

....

....

....

2. विद्यार्थियों के समूह बनाते समय किन मुख्य बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है?

....

....

....

3. एक समान अनुभव रखने वाले बच्चों को एक ही समूह में रखना उचित है अथवा नहीं। तर्क के साथ उत्तर दीजिए।

....

....

....

13.3.1 समय निर्धारण

कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधि की प्रकृति, उद्देश्य और उसके आधार पर प्राप्त होने वाले अपेक्षित परिणामों की प्रकृति के आधार पर प्रत्येक गतिविधि का समय निर्धारित किया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक गतिविधि के समस्त सोपान विद्यालय में ही सम्पन्न करवाए जाएँ। कुछ ऐसे भी कार्यकलाप हो सकते हैं जिनका प्रथम सोपान विद्यालय में अध्यापक के प्रदर्शन से आरम्भ हो, तत्पश्चात् विद्यार्थी घर, समुदाय में जाकर अपनी–अपनी सुविधानुसार उस प्रक्रिया का अनुभव करें।

समय के संबंध में महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है– कौन सा कार्य कलाप सत्र/वर्ष के किस 'समय' करना है। इस बिन्दु का निर्धारण कार्यकलाप की प्रकृति, विद्यालय व समुदाय की आवश्कता पर निर्भर करेगा।

कार्य शिक्षा अध्यापक होने के नाते आप योजना बना सकते हैं कि इस माह अर्थात् प्रवेश प्रक्रिया के दौरान विद्यालय में क्या–क्या अतिरिक्त कार्यकलाप होने चाहिए और उनमें से कौन से कार्यकलाप कार्य शिक्षा कार्यक्रम क अंग बन सकते हैं–

1. विद्यालय की पोशित बस्तियों (जहां से बच्चे दाखिले के लिए विद्यालय आते हैं) में विद्यालय के दाखिले सम्बन्धी नियमों की जानकारी व्यक्तिगत संपर्क द्वारा, डुगडुगी पिटवा कर, माता–पिता की नुक्कड़ बैठक आमन्त्रित कर दी जा सकती है।

2. प्रवेश के समय विद्यालय में कुछ विशेष प्रबन्ध करने होते हैं, जैसे विद्यालय के मुख्य द्वार पर दिशा निर्देश देने संबंधी कार्य, अभिभावकों के बैठने का प्रबंध, निरक्षर

टिप्पणी

माता–पिता द्वारा प्रवेश पत्र न भर पाने की स्थिति में उनका प्रवेश पत्र भरने में मदद करना, सभी के लिए पेयजल की व्यवस्था करना आदि। यह भी कार्य शिक्षा कार्यक्रम के कार्यकलापों की सम्भावना खोजी जा सकती है।

3. अप्रैल माह के पश्चात् मई व जून ग्रीष्म अवकाश का समय होता है, आप योजना बना सकते हैं कि मौसम को देखते हुए विद्यार्थियों को कोन–से कार्य दिए जाए। बीजों का संग्रह, पत्तियों का संग्रह, आम की गुठली से पपीहा बनाना, आम का पना बनाना, आम की किस्में जानना, अवकाश के किसी भी दस दिन की डायरी लिखना, टूटी–फूटी वस्तुओं का संग्रह करना आदि कार्यकलाप घर पर करने के लिए दिए जा सकते हैं।

4. ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् माह जुलाई में विद्यालय पुनः खुलते हैं। अब आपके पास जुलाई के मौसम व विद्यालय की गतिविधियों को देखते हुए अनेक कार्यकलाप है, आप कक्षा विशेष के विद्यार्थियों की शारीरिक –मानसिक क्षमता के अनुसार कोई भी कार्यकलाप चुन सकते हैं–

   नव आगन्तुक स्वागत समारोह का आयोजन (नए विद्यार्थी अभी भी प्रवेश ले रहे होंगे उन सभी के स्वागत को अनौपचारिक रूप दिया जा सकता है।)

5. जुलाई माह में आम तौर पर बारिशें होती है। आप स्थान की उपलब्धता को देखते हुए कृषि संबंधी कार्य भी करवा सकते हैं। इसके अतिरिक्त बारिश के बाद सीलन से बचने के उपाय, दालों का भण्डारण, कपड़ों की सुरक्षा पर भी कोई गतिविधि सोची जा सकती है।

   जुलाई में ही 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस होता है। इसक दिवस के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अनेक कार्यकलाप हो सकते हैं जैसे–

   1. जागरूकता रैली, प्रभात फेरी, नुक्कड़ नाटक व सभाओं का आयोजन;
   2. जनसंख्या सम्बन्धी नारे लिखवाना।

6. अगस्त माह स्थानीय व राष्ट्रीय पर्वो का माह होता है। पर्वों की प्रक ति के अनुसार राखी बनाना, झंडे बनाना, सांस्क तिक कार्यक्रमों का आयोजन आदि कार्यकलापों के बारे में विचार किया जा सकता है।

13.3.2 स्थान का निर्धारण

कार्य शिक्षा संबंधी कार्यकलापों के सफल संचालन हेतु स्थान की उपयुक्तता एक महत्ती आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर पर कार्य शिक्षा क्रियाएं सरल ओर बच्चों के लिए आनंददायी होती है। वे पर्यावरण अध्ययन के रूप में, कार्य परिस्थितियो तथा कार्य की प्रारम्भिक प्रक्रियाओं के अवलोकन के रूप में होती है। यदि आप इस तथ्य को भली–भांति समझ गए हैं तो 'स्थान निर्धारण' करने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता यदि हम

पर्यावरण अध्ययन, कार्य प्रक्रियाओं के अवलोकन को ही अपने कार्यक्रम में सम्मिलित करते हैं तो निसन्देहात्मक रूप से हमारा स्थान विद्यालय का कक्ष न होकर स्थानीय बस्ती का कोई हिस्सा होगा जैसे–

- सार्वजनिक नल;
- कुम्हार का कार्य स्थल;
- मोची का कार्य स्थल;
- सब्जी विक्रेता की दुकान, रेहड़ी;
- दर्जी की दुकान;
- डाकघर, बैंक, राशन की दुकान;
- फल संरक्षण केन्द्र;
- सामुदायिक केन्द्र;
- बस्ती विकास केन्द्र;
- प्रौढ एवं अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र;
- पार्क, खेत, बाग–बगीचे, क्यारियाँ;
- सुविधा वंचित समूहों के लिए बनाए गए विशेष सुविधा केन्द्र जैसे अंध–विद्यालय वृद्धजनों के लिए गृह, बालगृह;
- अपना बाजार, सुपर बाजार आदि;
- लघु कुटीर;
- साप्ताहिक बाजार;
- समय–समय पर लगने वाले मेले।

स्थान के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिदुंओं को ध्यान में रखना आवश्यक है –

1. कार्यस्थल की विद्यालय से दूरी

यदि कार्य स्थल विद्यालय से बहुत दूर है तो आने–जाने में ही समय वशक्ति दोनों का ही अपव्यय होगा। इसलिए कम दूरी वाले कार्यस्थलों को प्राथमिकता दें।

2. भौगोलिक, सामाजिक परिस्थिति

भौगोलिक, से यहां तात्पर्य मौसम की दशा को लेकर है, बहुत अधिक ठंड, प्रचंड गरमी व बारिश के दिनों में बच्चों को बाहर के कार्य स्थलों पर ले जाने से बचें। बच्चों का स्वास्थय व सुरक्षा आपकी चिन्ता का विषय है। सामाजिक परिस्थिति से तात्पर्य है बस्ती में या कार्य स्थल के आस–पास किसी विशेष घटना (दुखद/सुखद) का

टिप्पणी

घटित होना। राजनैतिक रैलियाँ, विवाह तथा धार्मिक जलसे, आगजनी आदि। परिस्थितियों में भी भ्रमण की योजना नहीं बनानी चाहिए।

3. बच्चों की संख्या

आपकी योजना में बच्चों की संख्या को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। कितने बच्चों को आप एक साथ कार्य स्थल के अवलोकन हेतु ले जा सकते हैं– इसका निर्णय लेना आवश्यक होगा। क्या आप अकेले ही बच्चों को ले जा रहे हैं?

प्रगति जाँच -5

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधियों के आयोजन के संदर्भ में 'समय निर्धारण' से आप क्या समझते हैं ?

2. कक्षा 8 के लिए शरदकालीन अवकाश में करवाई जाने वाली कोई तीन गतिविधियों के नाम लिखें।

3. कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों के संचालन हेतु स्थान का चयन करते समय किन बातों को ध्यान में रखेंगे। किन्हीं चार बिंदुओं का उल्लेख करें।

13.4 भिन्न-भिन्न कक्षाओं हेतु कार्य शिक्षा के सत्रों की योजना

विद्यालयी शिक्षा के भिन्न–भिन्न स्तरों पर कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों की योजना बनाते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है :–

- बच्चों को स्व–अभिव्यक्ति के अवसर।

- बच्चों को उनके आस–पास के परिवेश का अवलोकन करने और उसके प्रति रुचि जागृत करने के अवसर।
- अपने दिन प्रतिदिन के कामों को सही तरीके से करने में सहायता।
- प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता।
- भिन्न–भिन्न क्रियाओं से प्राप्त अनुभवों के एकीकरण में सहायता।
- दिन–प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने के लिए आधारभूत कौशल प्राप्त करने में बच्चों की सहायता।
- समूह में रहने और दूसरों की सहायता करने से सम्बन्धित सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने में मदद।

13.4.1 मूल भूत जरूरतों की श्रेष्ठतर पूर्ति से जुड़े कार्यकलाप

इस क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यकलाप सम्मिलित किए जा सकते हैं –

1. **स्वास्थ्य एवं स्वच्छता**

- व्यक्तिगत सफाई के प्रति जागरूकता, अपने काम में आने वाली वस्तुओं की सफाई एवं रख–रखाव।
- कॉपी– किताबों पर जिल्द चढ़ाना।
- घर एवं विद्यालय में सफाई बनाए रखना।
- छोटी–मोटी मरम्मत, टाटपट्टी, बुक रैंक, दरी, पोस्टर, केलैण्डर, चार्टपेपर या अन्य तस्वीरों का रख–रखाव।

2. **भोजन एवं कृषि**

- विभिन्न प्रकार के बीज, वन उत्पाद्य, खाद व मिट्टी की पहचान।
- कृषि के काम में प्रयुक्त सामान्य उपकरणों, कृषि उत्पादों एवं खाद की पहचान।
- कम्पोस्ट खाद के गढ्डे को तैयार करना, क्यारियाँ तैयार करना, अच्छे बीजों का चुनाव करना आना, बीज बोना।
- पौधों की देखभाल एवं रखरखाव।
- खाद्य एवं फल संरक्षण।
- चाय, कॉफी, जलजीरा, आदि बनाना आना।
- शर्बत, अचार बनाना।

- घड़े, मिट्टी का ड्रम, गुलदानों की सहायता से कूलर तैयार करने का प्रयास करना।
- प्लास्टिक, जूट, डोरी आदि की सहायता से झींगा तैयार करना।

3. **आवास**

- घास, नारियल की छाल, जूट, तुरई की छाल, पतली तार, जाली, अनुपयोगी स्पंज, मोजे से बोतल साफ करने वाला ब्रुश, बर्तन साफ करने वाला झामा बनाना।
- रैक, मेज, कुर्सी, स्टूल, चारपाई, नल की मामूली मरम्मत करना आना।

4. **वस्त्र**

- टी.वी./बक्से आदि के लिए कवर बनाना आना।
- गुड़िया, कठपुतली बनाना आना।
- बची हुई ऊन, कपड़ों के टुकड़ों, जूट आदि से आसन, पायदान बनाना।

13.4.2 परिवेश के सौन्दर्यीकरण से संबंधित कार्यकलाप

1. **उपयोगी वस्तुएँ बनाना**

- पैन/पैंसिल होल्डर, पिन होल्डर, कूडादान, पत्रपेटी, हाथ का पंखा बनाना।
- मुखौटे बनाना।
- मैकरमे का काम
- विद्यालय में डिस्प्ले बोर्ड के लिए सामग्री तैयार करना।
- टूटी चूड़ियां या किसी और समाग्री से मिट्टी के बर्तनों को सजाना।
- मिट्टी से खिलौने बनाना।

2. **सजावट हेतु सामग्री तैयार करना**

- कपड़ों की कतरनों से, पतले रंगीन कागजों से, तार, मोती, धागों आदि की मदद से फूल बनाना।
- मिट्टी के बर्तनों पर सजावट करना।
- मिट्टी से खिलौने, चिड़ियां, जनावरों आदि की आकृति बनाना।
- सुतली, बान, प्लास्टिक के धागों से सजावटी वस्तुएँ बनाना।
- पुरानी ऊन से मैट आदि बनाना।
- बाँस से फूलदान बनाना।

टिप्पणी

13.4.3 सामुदायिक सेवा से संबंधित कार्यकलाप

- मुहल्ले की सफाई अभियान में भाग लेना।
- त्यौहार आदि उत्सव आने पर समुदाय में लोगों के साथ सजावट के काम में हिस्सा बँटाना।
- बड़े–बूढ़ों की यथा सम्भव आवश्यकतानुसार मदद करना।
- विद्यालय परिसर, कक्षा की सफाई में क्षमतानुसार हाथ बँटाना।
- शारीरिक रूप से चुनौती वाले व्यक्तियों की दिन प्रतिदिन के कार्यों में मदद करना।

13.4.4 सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय एकता से संबंधित कार्यकलाप

- विभिन्न राज्यों के लोगों की खान–पान, रहन–सहन संबंधी आदतों का पता लगाना।
- जगह–जगह की हस्त कला की जानकारी इकट्ठी करना।
- संगीत वाद्य यंत्रों, न त्यों की जानकारी, उनके चित्र इकट्ठे करना।
- स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस व अन्य राष्ट्रीय त्यौहारों की जानकारी व उन्हें मनाना।
- राष्ट्रीय झंडा व अन्य राष्ट्रीय चिन्ह्, जैसे–चक्र, आदि के चित्र बनाना।

13.4.5 पर्यावरण जागरूकता से संबंधित कार्यकलाप

- पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित चित्र एवं समाचार एकत्रित करना।
- पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों के चित्र बना उन्हें बुलेटिन बोर्ड पर लगाना।
- पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित नारे बनाना व उन्हें लोगों तक पहुंचाना।
- पर्यावरण प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों से संबंधित चार्ट बनाना।
- वन महोत्सव, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेना।

प्रगति जाँच -6

1. परिवेश के सौदर्यीकरण से संबंधित कोई तीन कार्यकलाप लिखिए।

....

....

....

टिप्पणी

2. सामुदायिक सेवा से संबंधित गतिविधियों की सूची तैयार करें। (कक्षा 6 व 7 के लिए तीन–तीन गतिविधियाँ)

....

....

....

13.5 प्रारंभिक कक्षाओं के संदर्भ में कार्य शिक्षा के लिए सामग्री का चयन एवं संयोजन

कार्य शिक्षा के बारे में आपकी जो समझ बनी है वह यह कहती है कि यह एक अर्थपूर्ण एवं सार्थक शारीरिक श्रम निहित गतिविधि है। जिसकी परिणिति या तो किसी उत्पाद के रूप में दिखती है अथवा किसी सेवा के रूप में। सेवा संबंधी परिणामों के लिए सामाजिक परिस्थितियां एवं परिवेश हमारे लिए सदैव उपलब्ध है परन्तु जहां कुछ बनाने का संदर्भ आता है वहां अध्यापक या तो विद्यार्थियों को घर से सामग्री लाने के लिए कहते हैं या विद्यालय में उस सामग्री को खरीदने के लिए अतिरिक्त 'फंड' की बात करते हैं।

आपकी कक्षा में बहुत से विद्यार्थी ऐसे हो सकते हैं जो तरह–तरह की सामग्री खरीद कर न दे सकें, ऐसे में बच्चे विद्यालय आने से कतराने लगते हैं। आप स्वयं से सवाल करें कि क्या कार्य शिक्षा के अन्तर्गत कार्य कलाप करवाने के लिए बाजार से सामान इत्यादि खरीदना बहुत आवश्यक है ? जहां तक उपकरणों की बात है जैसे चॉक, मोमबत्ती आदि बनाने के लिए खांचे, या फिर बांधनी आदि के लिए पतीले आदि विद्यालय की ओर से उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। यदि किसी कारणवश विद्यालय नहीं दे पा रहा तो समुदाय का सहयोग लेकर इन सब उपकरणों की उपलब्धता के बारे में विचार किया जा सकता है। यदि यह भी संभव नहीं है तो यह जरूरी नहीं कि हम किन्हीं और गतिविधियें के बारे में विचार कर नहीं सकते।

आप भलीभांति जानते हैं कि कार्य शिक्षा के अंतर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियां सुझावित हैं, प्रस्तावित है, निर्धारित नहीं, तो आप अपने विवेक का सहारा लीजिए और उन गतिविधियों का चयन करें जिनके लिए सामग्री व उपकरणों की उपलब्धता आसान है।

क्या आपने कभी सोचा है कि आपके चारों ओर नाना प्रकार की सामग्री उपलब्ध है। क्या आप उस सामग्री का उपयोग करने की सोच सकते हैं ? अपने आस–पास उपलब्ध सामग्री की एक सूची बनाएं। कृपया अपनी इस सूची की तुलना अपने साथियों की सूची से करें जो दूसरे क्षेत्रों में रहते हैं। आप पाएंगे कि हरेक की सूची में कुछ न कुछ नवीन हैं। एकत्र की जा रही सामग्री को तीन इकाईयों में बांटा जा सकता है–

1. प्रक ति से सरलता पूर्वक उपलब्ध सामग्री।

2. अनुपयोगी सामग्री

3. कम लागत वाली सामग्री

प्रकृति से सरलता से उपलब्ध सामग्री	अनुपयोगी सामग्री	कम लागत वाली सामग्री
पौधे, बांस, पत्तियों, बीज, फल–फूल, पेड़, तने, पेड़ की छाल, जूट, नारियल के खोपरे, नारियल की छाल, रेत, मिट्टी, कंकर/पत्थर, पानी, ग्लू, नीम, लाख।	खाली डिब्बे, पंख, लकड़ी एंव गत्ते के डिब्बे, उपयोग की गई फोम/स्पंज, जूते के डिब्बे, खाली माचिस के डिब्बे, कतरने, पुराना कंबल, पुरानी चटाई, पुराने अखबार, पुरानी पत्रिकाएं, उपयोग किए गए प्लास्टिक के बैग, सॉफ्ट ड्रिंक की बोतलों के ढक्कन, उपयोग किए हुए प्लास्टिक के कप। पतली तार/ मोटी तार, टूथ पेस्ट के ढक्कन, अनुपयोगी पैन, पुराने ब्लेड, पुराने पोस्टकार्ड, ग्रीटिंग कार्ड, पुरानी स्टैम्प, पुराने लिफाफे, धागे, कार्क, बटन, चेन, साइकिल की ट्यूब, आइसक्रीम की चम्मचें, अंड़े के छिलके, पुरानी झाड़ू, पुरानी टोकरी, उपयोग किए गए बटन।	साधारण परन्तु महत्वपूर्ण उपकरण– कैंची, चाकू, पैमाना, टेप, गोंद, मोमबत्ती, कपड़ा, नापने का फीता, वाशर कीलें। स्क्रू, धागे, लकड़ी के टुकडे, ब्रुश। रंग, नील, गेरू, तरह–तरह के कागज, रेक्सीन, तार, रबर।

कृपया इस सूची को ध्यानपूर्व देखें। अप पाएंगे कि यह सारी सामग्री हमारे आस–पास ही उपलब्ध है। हमें इस सामग्री के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं। आप की सूची पूर्वोक्त सूची से बड़ी हो सकती है। यदि बच्चों से इस प्रकार की सामग्री को ढूंढकर विद्यालय में इकट्ठा करने के लिए कहा जाए तो वे यह काम बड़े उत्साह से करेंगे। इस सामग्री की एक सूची भी बनाएं और यह भी लिखें कि कौन–सी सामग्री कब इकट्ठी की गई व किसके द्वारा। जब कभी कोई बच्चा कोई दुर्लभ वस्तु लाता है तो प्रार्थना सभा आदि में उसे सम्मानित करें। 'इस सप्ताह की आक िक सामग्री' इस प्रकार के आक िक नारे भी लिख कर लगा सकते हैं। इससे बच्चों में उत्साह बढ़ेगा भिन्न–भिन्न सामग्री को एकत्र करने का। इससे बच्चों में कई सकारात्मक बातों का विकास होगा।

1. **वैज्ञानिक**

2. **व्यवस्थित तरीके से वस्तुओं का रखना।**

3. **आस–पास के पर्यावरण का अवलोकन करने की शक्ति का विकास।**

अब आवश्यकता है इस बात पर विचार करने की कि इस संग्रह का सही उपयोग कैसे किया जाए–

सोच–समझ कर आयोजित की गई गतिविधियां बच्चों को सीखने के कई सुंदर अवसर प्रदान करती हैं। स्वयं निर्णय लेने से पहले यह अच्छा रहेगा कि बच्चों से ही पूछें कि संग्रह की गई सामग्री से कोन सी वस्तु बनानी चाहिए। चर्चा के समय कौन–सी सामग्री का स्रोत क्या है, उसके उपयोग क्या हैं। इन पर भी बातचीत की जाए। इस चर्चा से पर्यावरण अध

यन व विज्ञान के कई मुद्दों पर बात हो सकती है। साथ ही एक सामग्री के कई विकल्पों की भी जानकारी हो सकती है।

आप यह जानते हैं ही कि एक प्रकार की सामग्री से कई वस्तुएं बनाई जा सकती हैं। विभिन्न विद्यालयों से एकत्रित की गई सूची नीचे दी गई है जो यह दर्शाती है कि एक सामग्री से कौन–कौन सी वस्तुएं बनाई जा सकती है।

13.6 सामग्री एवं उपकरणों का भंडारण एवं प्रबंधन

आपने अनुभव किया होगाकि विद्यालयों विशेष कर सरकारी विद्यालयों में प्रयोगशालाओं में नाना प्रकार के बहुमूल्य उपयोगी उपकरण मौजूद रहते हैं, उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री की कमी भी दिखाई नहीं देती फिर फी बच्चे प्रायोगिक कार्य नहीं कर पाते क्योंकि–

- उपकरण कार्य नहीं कर पाते,
- सामग्री खराब निकल जाती है।

कभी आपने विचार किया है कि ऐसा क्यों होता है ?

आप सही दिशा में सोच रहे हैं। यह सिर्फ इस वजह से होता है कि उपकरणों की सही रूप से न तो देखभाल की जाती है और न ही उपयोग। आवश्यकता है ऐसे दृष्टिकोण की कि यह सामग्री व उपकरण हमारा ही है और इसकी देखभाल, प्रबंधन व भंडारण भी उन्हीं कौशलों व भाव की मांग करता है, जिन कौशलों के साथ हम अपने घर के सामान का प्रबंधन करते हैं।

विद्यालय में सबसे पहले तो जरूरी है कि कार्य शिक्षा के अन्तर्गत मांगवाए गए उपकरणों की एक सूची बनाएं और स्टॉक रजिस्टर में उसकी दिए गए कॉलमों के अनुसार प्रविष्टियां भरें। प्रबंधन के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। आप नीचे लिखें बिन्दुओं को भी ध्यान में रखें–

1. आवश्यकतानुसार उपकरणों व सामग्री की उपलब्धता सुलभ बनाएं। यहां सुलभ बनाने से तात्पर्य है कि उपकरणों व सामग्री के प्रयोग में संकोच न करें। बहुत से विद्यालयों में बहुत सा सामान मात्र इसलिए उपयोग में नहीं लाया जाता कि कहीं टूट–फूट न जाए। अधिकांश उपकरण बिना उपयोग में लाए ही बेकार हो जाते हैं। आपसे अपेक्षा है कि आप ऐसा नहीं करेंगे।
2. जब भी प्रयोग के लिए विद्यार्थियों को दिए जाएं, उनका सावधानी पूर्वक उपयोग किए जाने से संबंधित मुख्य बिंदु बतलाएं जाएं।
3. उपयोग के बाद रूई या पुराने सूती कपड़े से पोछकर ही वापिस रखा जाएं
4. रखने के स्थान की देखभाल भी आवश्यक है। आप यह बिंदु अवश्य ही सुनिश्चित

करना चाहेंगे कि जिस स्थान –अल्मारी, बक्सा, मेज आदि। पर सामग्री या उपकरण रखा जाना है, वह साफ सुथरा है या नहीं। उसकी धूल हटाना निश्चित रूप से आवश्यक होगा।

5. यदि किन्हीं कारणों से उपकरण उपयोग में नहीं आ रहे तो भी बीच–बीच में उन्हें निकालकर उनकी झाड़–पोंछ करनी जरूरी है। आवश्यकतानुसार उन्हें धूप रोशनी में भी रखना जरूरी होगा।

6. कुछ उपकरण ऐसे भी होंगे जिन्हें 'आयलिंग' की जरूरत है। अतः सही समय व सही मात्रा में तेल भी डालने की अवधि सुनिश्चित करनी चाहिए।

7. आमतौर पर उपकरणों के संबंध में यह प्रव त्ति देखी गई है कि उनमें थोड़ी सी खराबी आने पर उन्हें बेकार धोि ात कर दिया जाता है। संभवतया आप इस प्रव त्ति से बचना चाहेंगे। उपकरण के संबंध में तकनीकी समझ रखने वाले विशेषज्ञ से सलाह लेकर ही उसे फेंकने अथवा पुनः उपयोग में लाने का निर्णय करेंगे।

8. आपसे यह भी अपेक्षा की जाती है कि छोटी मोटी टूट–फूट को ठीक करने से संबंधित कौशल आप स्वयं तो अर्जित करें ही और अपने विद्यार्थियों में भी यह गुण विकसित करें कि आवश्यकतानुसार उपकरणों की छोटी–मोटी मरम्मत वे स्वयं कर सकें।

प्रगति जाँच -7

कार्य शिक्षा में प्रयुक्त होने वाली सामग्री से संबंधित कुछ कथन नीचे दिए गए हैं सही कथनों पर का निशान लगाएँ –

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत प्रायोगिक कार्य करवाने के लिए आवश्यक है कि बहुत से उपकरण व सामग्री खरीद कर रखे जाए।
2. परिवेश में उपलब्ध सामग्री को ढूंढकर लाना व उसका कक्षा में उपयोग करना रचनात्मक प्रवृति का परिचायक है।
3. यदि विद्यालयी व्यवस्था सामग्री खरीदकर नहीं देती तो प्रायोगिक कार्य स्थगित कर दिए जाने चाहिए।
4. उपकरणों की साज संभाल के लिए आवश्यक है कि उन्हें विद्यार्थियों के हाथ में न दिखाया जाए।
5. उपकरण में थोड़ी सी भी तकनीकी खराबी आने पर संबंधति विशेषज्ञ की मदद ही लेनी चाहिए।

टिप्पणी

13.7 विभिन्न पाठ्यचर्यक विषयों से जुड़ाव एवं अनुभव देने की पद्धतियां

वर्ष 1964–66 के आयोग ने औपचारिक शिक्षा की अति अकादमिक प्रकृति में बड़े बदलाव की जरूरत महसूस की थी। गांधी जी ने उत्पादक कार्य को अनिवार्य रूप से शिक्षा के माध्यम के रूप में शिक्षा प्रक्रिया में शामिल करने की बात कही थी। उनके अनुसार गणित, विज्ञान, पर्यावरण, इतिहास, भूगोल और नागरिग शास्त्र सभी विषयों की शिक्षा तकली, बढ़ईगीरी, लुहारी, खेती, छपाई, और दूसरे उत्पादक कामों के माध्यम से होनी चाहिए। उन्होंने दूरगामी सामाजिक परिवर्तन की शैक्षिक प्रकिया को भी काम के साथ जोड़ने की बात कही थी। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी वस्तु/घटना/परिघटना या स्थिति विशेष से जुड़े सैद्धान्तिक ज्ञान को पृथक रूप से समझाने के स्थान पर कार्य के माध्यम से समझाना चाहिए। इस तथ्य को समझने के लिए गांधी जी के निम्नलिखित कथन पर ध्यान दें...।

''...हमारा उद्देश्य है कि व्यवसाय और हस्तकारी के साथ–साथ व्यक्तिका बैद्धिक विकास भी होना चाहिए, इसलिए मेरा कहना है कि सिर्फ व्यवसाय और हस्तकारी सिखाने की जगह बच्चों की पूरी की पूरी शिक्षा ही उसके माध्यम से दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए सिर्फ तकली को ही लें। तकली से छात्र जो पाठ पढ़ेंगे उससे वे सूत का इतिहास, लंकाशायर और पूरे बिटिश सामाज्य के बारे में जान लेगें.... तकली कैसे काम करती है ? उसका उपयोग क्या है ? और उसमें कौन सी शक्ति छिपी हुई है। इस तरह बच्चें बहुत सी बातें कार्य करते–करते सीख लेंगे। इससे वह थोड़ी बहुत गणित भी सीख लेगा। जब वह पूछेगा कि तकली पर कितना धागा लपेटा गया है और तकली को कितनी बार छुमाया गया हैकृ कृ तो इस तरह कदम दर कदम वह गणित में भी दक्ष हो जाएगा। इसमें सबसे सुंदर बात यह होगी कि इस सबसे उसके दिमाग पर भी कोई बोझ नहीं पड़ेगा ।''

22 अक्टूबर 1937, वर्धा के शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी के भाषण का अंश

गांधीजी के वक्तव्य से आपको स्पष्ट हो गया होगा कि कार्यशिक्षा संबंधी गतिविधियाँ विद्यालयी पाठ्यक्रम में प थक रूप से न आयोजित करके अन्य पाठ्यचर्यक विषयों के साथ समन्वितकर आयोजित व संचालित की जानी चाहिए। भिन्न–भिन्न विषयों से कार्यशिक्षा संबंधी गतिविधियों का जुड़ाव करने के संदर्भ में कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

13.7.1 भाषा

भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित बिदुं विचारणीय हैं–

- किए गए कार्य के संबंध में लिखित अभिव्यक्ति,
- उचित शब्दों एवं सरल वाक्यों का प्रयोग

- व्यवस्थित क्रम के विचारों का प्रस्तुतीकरण
- संप्रेशण हेतु आकर्षक तथा सार्थक शीर्षक सुझाना
- छोटे तथा सरल वाक्यों में आलेख तैयार करना
- अनुभवों को सुसंबद्ध रूप में लिखना
- शब्द संपदा में वृद्धि
- मुहावरों का प्रयोग
- संदर्भ में व्याकरण का प्रयोग

13.7.2 गणित

कार्य शिक्षा से संबंद्ध गतिविधियां गणितीय ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है जैसे :–

1. यामपट्ट की पुताई करते समय कई तत्वों पर ध्यान दें–
    - क्षेत्रफल, लंबाई–चौडाई के अनुसार सामग्री की लागत।
    - समय का अनुमान।
    - मानवीय उर्जा / श्रम की खपत।
2. तरह–तरह की ज्यामितीय आक तियों का ज्ञान।
3. किसी भी वस्तु के निर्माण के बाद उसका मूल्य निकालना।
4. माप लेने का कौशल
5. संख्याओं का ज्ञान व समझ
6. माप लेने की इकाइयों की समझ व उन्हें एक–दूसरे में परिवर्तित करना आना।
7. सूद ब्याज आदि अवधारणाओं का परिचय

13.7.3 पर्यावरण अधययन, सामाजिक ज्ञान इतिहास आदि

किसी भी कार्य व कार्य प्रणाली का अपना एक भव्य इतिहास होता है, काम करने के दौरान उस काम के ऐतिहासिक महत्व की जानकारी प्राप्त करना किताब द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक है। कार्यशिक्षा के अन्तर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियाँ बहुत से सामाजिक सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों के प्रति सूक्षम व गहन समझ बनाती है जैसे :–

- कृषि कार्य से संलग्न लोगों का रहन–सहन।

टिप्पणी

- आवश्यकता व आपूर्ति में संबंध।
- मानव व पशु जीवन का संबंध।
- उद्योग एवं पर्यावरण
- वस्तुओं के निर्माण में श्रम का महत्व।
- मूल्यों का निर्धारण
- जाति एवं श्रम

विज्ञान परक सिद्धांत भी कार्य के दौरान समझे जा सकते हैं जैसे– घिरनी कैसे कार्य करती है, उत्तोलक व फलक्रम के क्या सिद्धांत हैं, दालों को भिगोकर बनाने से क्या लाभ है, संतुलित आहार में पहले से चली आ रही मान्यताओं के क्या अर्थ हैं आदि।

यहां पर आपको केवल कुछ ही बिंदु सुझाए है। आप समूह में बैठकर हर विषय को ऐसे बहुत से सिद्धांत की सूची बना सकते हैं जिनकी समझ कार्य शिक्षा की गतिविधियों द्वारा बनाई जा सकती है।

प्रगति जाँच -8

1. पाठ्यचर्या में तकली का कार्य विद्यार्थियों में किन–किन बातों की समझ पैदा करता है ?

   ....

   ....

   ....

2. भाषा संबंधी कोई चार कौशल सुझाए जो कार्य शिक्षा के अन्तर्गत किसी भी गतिविधि द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं ?

   ....

   ....

   ....

13.8 कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों के लिए सीखने सिखाने की पद्धतियाँ

कार्य शिक्षा के कार्यकलापों के आयोजन के लिए क्या पद्धतियां है या किस प्रकार विधियां

होनी चाहिए, इसका निर्धारण अनेक बातों से होता है। इन निर्धारक कारकों में मुख्यतः निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं –

- कार्य अनुभव के स्वरूप व उद्देश्य के बारे में हमारी क्या धारणाएं हैं;
- हमारे विचार से बच्चे किस प्रकार से व्यवहार करते है, वे व्यवहार के तरीकों को कैसे सीखते और विकसित करते हैं;
- हर बच्चे को अपने अधिकतम आत्म–साधन के लिए उपयुक्त तरी से अनुभव करने अथवा कार्य साधने के अवसर प्रदान किए जाए, इस बारे में हमारी क्या मान्यताएँ हैं?

उपरोक्त सवालों के उत्तर आपको कार्य शिक्षा की पद्धतियों का स्वरूप निर्धारित करने में सहायता प्रदान करते हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि कार्य शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को हाथ से काम करने के अवसर दिए जाते हैं। जब तक वे अपने हाथों से किसी कार्य को नहीं करेंगे, तब उस काम से जुड़ा अनुभव प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अतः कार्य शिक्षा से जुड़ी अनुभव पद्धतियों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी के लिए विशेष संभावनाएं होती है। कार्य अनुभव की कुछ पद्धतियां इस प्रकार हैं –

13.8.1 अवलोकन/निरीक्षण विधि

यह सर्वविदित है कि हर बच्चे में 'खोजी' प्रव ति विद्यमान रहती हैं। वे स्वभाव से ही जिज्ञासु होते हैं। अपने आस–पास घट रही घटनाओं को जानने के बारे में उनकी आँखों में कौतुहल निरंतर चमकता रहता है। वे कोशिश करते हैं कि कोई भी बात उनसे अछूती न रह जाए। कार्य शिक्षा की अवलोकन विधि उनकी इसी खोजी प्रव त्ति पर आधारित हैं इस विधि का उपयोग हम दो प्रकार से करते हैं–

- विद्यार्थी को किसी भी घटना, वस्तु अथवा सामाजिक –सांस्कृतिक परिघटनाओं का अवलोकन करने के लिए कहना और उसके आधार पर अपने ज्ञान व समझ में व द्धि करना।
- सामाजिक परिवेश में होने वाली आर्थिक प्रक्रियाओं का, कार्यस्थलों का अवलोकन करके अनुभव प्राप्त किए जाते हैं।

जहां तक सामाजिक –सांस्कृतिक घटनाओं का संबंध है, इसके लिए विद्यार्थियों को किसी प्रकार के निर्देश नहीं दिए जाते अपितु कक्षा में कुछ इस प्रकार से सत्र आयोजित किए जाते हैं कि वे अवलोकन की गई घटनाओं व प्रक्रियाओं का वर्णन कक्षा में करें तदुपरान्त अन्य विद्यार्थी अपनी–अपनी टिप्पणी देते हैं। किस प्रकार की घटनाओं के अवलोकन को कार्य शिक्षा कार्यक्रम में स्थान दिया जा सकता है। यद्यपि यह प्रश्न सर्वथा अविवेकपूर्ण समझ का परिचय देता है, क्योंकि जीवन से जुड़ी प्रत्येक घटना कार्य शिक्षा का विषय क्षेत्र है।

13.8.2 प्रदर्शन विधि

'बच्चे व्यवहार करने के तरीके कैसे सीखते हैं ? इस प्रश्न का बहुत ही सहज उत्तर है– वे अपने बड़ों को जो कुछ भी करता हुआ देखते हैं, अवलोकन क्षमता के माध्यम से देखते और सीखते और स्वयं करने लगते हैं। यहां पर बड़ों द्वारा ही क्यों, अपने साथियों के कार्यकलापों का भी अवलोकन कर उसे अपनी दिनचर्या में ढालने का प्रयास करते हैं।

आप उपरोक्त बात पर ध्यान दीजिए **'जो कुछ भी करता हुआ देखते हैं'** अर्थात् जो कुछ भी प्रदर्शित किया जा रहा है, सीखने का प्रयास करते हैं।

कार्य शिक्षा की यह पद्धति सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ती है। अर्थात् एक क्रिया विशेष की प्रक्रिया विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है। प्रक्रिया के प्रदर्शन के साथ–साथ विशेष उदाहरणों द्वारा प्रक्रिया से जुड़े नियमों की सत्यता प्रमाणित की जाती है। इस विधि के अनुसरण हेतु कृपया निम्नांकित सोपान देखें –

- **नियमों का कार्य प्रक्रिया सहित प्रस्तुतीकरण** – जिन नियमों को प्रस्तुत कना अभीष्ट होता है, उन्हें तर्कपूर्ण ढंग से विश्लेषित कर लिया जाता है और विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता के अनुकूल उन्हें क्रमपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है।
- **कार्य प्रक्रिया से जुड़े नियमों के अंदर संबंध निरूपण** – नियमों की प्रस्तुत करने के बाद उनसे जुड़े तर्कयुक्त संबंधों का निर्धारण किया जाता है। इसे विश्ले ाण की प्रक्रिया भी कहा जाता है। **'ऐसा क्यों किया जा रहा है ?'** और प्रस्तुत नियम प्रयुक्त हो सकते है ?
- **उदाहरणों से पुष्टि** – तर्कपूर्ण कार्य पद्धति के लिए यह सोपान अत्यावश्यक हैं आप गमलों में पौधा लगाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन कर रहे हैं। आप बच्चों को दिखा रहे हैं कि मिट्टी किस प्रकार भुरभुरी की जाती है, ऐसा करना क्यों जरूरी है, इस पर प्रश्न भी कर रहे हैं, साथ–साथ आप उनके अनुभवों के आधार पर उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

13.8.3 प्रयोगात्मक विधि

इस विधि के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयोगात्मक रूप में कार्य करते हैं। इस विधि द्वारा स्वयं नई परिस्थितियों में अपने पूर्व अनुभव के आधार पर कार्य करके सीखने के सिद्धांत पर बल दिया गया है। प्रयोग करते समय विद्यार्थी की समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियां सक्रिया रूप से कार्यशील रहती हैं। विद्यार्थी एक अंवेशक के रूप में कार्य करते हैं क्योंकि प्रयोगात्मक विधि में स्वयं सीखने की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है।

इस पद्धति के कतिपय आधारभूत सिद्धांत इस प्रकार हैं –

- **स्वयं करके सीखना** – संपूर्ण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका मुख्य होती

टिप्पणी

है। उन्हें केवल उतनी ही सूचना दी जाती है जो उनमें कार्य में प्रव त्त होने के लिए रूचि व उत्साह पैदा कर सकें शेष उन्हें स्वयं ही प्रयास करके खोजना पड़ता है।

- **विद्यार्थियों की क्रियाशीलता** – चूंकि विद्यार्थी स्वयं करके सीख रहे हैं अतः स्वाभाविक है कि उनकी क्रियाशीलता मुख्य रूप से मुखरित हों नि क्रय रहकर वे समस्या समाधान, नई खोज या किसी भी सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं कर सकते।
- **मनोवैज्ञानिकता** – इस विधि में विद्यार्थी अपनी रुचि, जिज्ञासा, आवश्यकताओं उत्साह व स्वाभाविक कार्यशैली के अनुसार कार्य करते हैं। वे अपने पूर्व अनुभवों का भरपूर लाभ उठा सकते हैं।
- **वैज्ञानिकता** – विद्यार्थी स्वयं कार्य में प्रव त्त हैं, हर सोपान के प्रति 'क्यों' सवाल उत्पन्न कर उसका उत्तर खोजते हैं, क्रमबद्ध तरीके से कार्य करते हैं अतः उनमें वैज्ञानिक तत्परता के कौशल का विकास होता है। वे अपने आप को एक अन्वेशक की स्थिति में रखकर सिद्धांतों, नियमों तथा स्थापनाओं की जांच करते हैं। वस्तुस्थिति का अवलोकन करने तथ्यों की पहचान करने आदि में विशेष सजगता का दृष्टिकोण अपनाते हैं।

13.8.4 योजना पद्धति

इसके अन्तर्गत विद्यार्थी किसी समस्या/कार्य विशेष को लेकर स्वयं उद्देश्य निर्धारित करते हैं, वे स्वयं ही योजना बनाते हैं कि उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु क्या संसाधन होंगे, क्या तकनीक होंगी और कितने समय में कार्य पूरा कर लिया जाएगा। कार्य शिक्षा में इसके वास्तवक स्वरूप को जानने से पहले हम 'योजना' की परिभाषा पर विचार करेंगे।

'योजना सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता के साथ संपादित की जाने वाली सोद्देश्य क्रिया है।'

किलपैत्रिक

''योजना पद्धति एक ऐसी समस्यात्मक क्रिया है जो प्राकृतिक वातावरण में पूर्ण की जाती है।''

जे.ए.स्टीवेन्सन

शैक्षिक संदर्भों, विशेषकर कार्य अनुभव की प्रकृति के संदर्भों में *वेस्ले* योजना पद्धति की व्याख्या कुछ इस प्रकार करते हैं –

''योजना वे समन्वित क्रियाएं हैं जो किसी महत्वपूर्ण दक्षता या प्रक्रिया को सीखने के लिए प्राक तिक वातावरण में पूरी की जाती है।''

यद्यपि सभी विशेषज्ञों ने अपने –अपने मतानुसार परिभाषित किया है। परन्तु सभी योजना पद्धति के कुछ सामान्य लक्षणों की ओर संकेत करते हैं।

- प्रत्येक योजना पद्धति किसी उद्देश्य विशेष को प्राप्त करने की दृष्टि से कार्यान्ति की जाती हैं।

- उद्देश्य का निर्धारण विद्यार्थी के सामाजिक, सांस्क तिक जीवन, उनके व्यक्तिगत विकास, समुचित सामाजिक उन्मुखीकरण से संबंधित आदतों, दृष्टिकोणों और विश्वासों के विकास को दृष्टि में रखकर किया जाता है।
- उद्देश्य के आधार पर भिन्न–भिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।
- विद्यार्थी अपने वास्तविक सामाजिक वातावरण में ही गतिविधियों को कार्यान्वित करते हैं।
- कार्य के दौरान वे सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों का विकास करते हैं।
- कार्य संपादन के पश्चात् उनमें निश्चित अभिव त्ति और दक्षताओं का विकास होता है।

कार्य शिक्षा के अन्तर्गत प्रस्तुत पद्धति द्वारा सीखने की प्रक्रिया मुख्यतः चार सोपानों से गुजरती है –

- उद्देश्य निर्धारण
- योजना बनाना
- योजना को कार्यान्वित करना
- मूल्यांकन

(यद्यपि मूल्याकन अंतिम सोपान के रूप में लिखा गया है परन्तु मूल्यांकन की प्रक्रिया उद्देश्य निर्धारण के समय से ही आरंभ हो जाती है। उद्देश्य निर्धारण की प्रक्रिया का भी मूल्यांकन किया जाता है।)

13.8.5 भ्रमण विधि

कक्षा की चारदीवारी के भीतर प्रदत्त किताबी ज्ञान से समृद्ध विद्यार्थी की स्थिति उस मेढक के समान ही है जिसे वह कुआँ ही समुद्र लगने लगता है। वस्तुतः 'भ्रमण' कार्य शिक्षा के लिए एक चमत्कारी विधि है। कार्य शिक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में भ्रमण विधि के बहुत से लाभ हैं –

- कक्षा में सत्रों की व्यवस्था वाले वातावरण में पढ़ने से एकरसता और नीरसता आ जाती है और भ्रमण विधि इस दिशा में एक रचनात्मक बदलाव ला सकती है।
- जिस विषय की सैद्धांन्तिक चर्चा कक्षा में की जाती है, उसका विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान होना भी आवश्यक है और भ्रमण विधि इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
- भ्रमण करने पर विद्यार्थियों की अवलोकन करने की क्षमता विकसित होती है, भ्रमण के दौरान वे कार्य को वास्तविक स्थिति में होता हुआ देखते हैं, वस्तु का यथास्थिति में अवलोकन करते हैं।

- भ्रमण द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी होती है।
- भ्रमण के दौरान विद्यार्थी को समूह में कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है।
- भ्रमण के माध्यम से विद्यार्थियों में इस बात की भी समझ विकसित होती है कि दूसरे स्थानों पर किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, लोगों से किस तरह संवाद स्थापित किया जाए आदि।

प्रगति जाँच -9

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत आप सीखने –सिखाने के लिए किन–किन विधियों का उपयोग करना चाहेंगे।

   ....

   ....

   ....

2. कार्य शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र से कक्षा आठ के लिए दो –दो गतिविधियों के नाम लिखें। उनका अनुभव प्रदान करने के लिए उपयुक्त विधि का नाम भी सुझाएँ।

   ....

   ....

   ....

13.9 सारांश

कार्य शिक्षा का कार्य क्षेत्र विशाल है अथवा हम कह सकते हैं कि समूची सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक स्थितियां कार्य शिक्षा का कार्य क्षेत्र है। प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आपने जाना कि कार्य शिक्षा का क्रियान्वयन किस तरह किया जा सकता है। आपने यह जाना कि गतिविधियों का आयोजन करते समय किन कार्य क्षेत्रों को प्रमुख आधार बनाया जाए, उपकरणों व सामग्री की उपलब्धता कैसे संभव बनायी जाए। उनका प्रबंधन व भंड़ारण कैसे किया जाए।

आपने यह भी जाना कि गतिविधियां करवाते समय विद्यार्थियों को समूह में बाँटने के क्या–क्या आधार होंगे। विभिन्न कक्षाओं के लिए तरह–तरह के कार्य–कलापों के आयोजन के बारे में आपने समझ प्राप्त की।

आपने यह भी जाना कि भिन्न–भिन्न पाठ्यचर्यक विषयों से कार्य शिक्षा को कैसे जोड़ा जा सकता है।

टिप्पणी

13.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परि ाद्, नई दिल्ली
2. शारदा कुमारी (2005) : कार्य अनुभव शिक्षण के सिद्धांत, नई दिल्ली।
3. रिचर्डस, ग्लिन (2001) : गांधी का शिक्षा दर्शन, नई दिल्ली, आकसफोर्ड यूनिवर्सटी प्रैस।
4. साइक्स, मारजोरी (1998) : नई तालीम की कहानी : सेवाग्राम में शिक्षा के पचास वर्ष – 1937–1987, नई तालीम समिति, सेवाग्राम वर्धा महाराष्ट्र।
5. भारत सरकार (1993) : बिना भार के सीखना : राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रिपोर्ट, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

13.11 अन्त्य इकाई अभ्यास

प्रस्तुत इकाई के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें–

1. ''कार्य शिक्षा की गतिविधियाँ प्रस्तावित है निर्धारित नहीं।'' इस कथन के संदर्भ में कोई पांच बिंदु प्रस्तुत करें।
2. विद्यालय में आप कार्य शिक्षा के प्रभारी हैं गतिविधियाँ करवाने के लिए सामग्री का प्रबंध आप किस प्रकार से करेंगे ?
3. कक्षा 6,7 व 8 के लिए पर्यावरण संरक्षण संबंधी कोई दो –दो गतिविधियों की सूची तैयार करें। सूची में यह भी दर्शाएं कि आप इन गतिविधियों को अकादमिक सत्र के किस माह में करवाना चाहेंगे ?
4. कार्य शिक्षा के संदर्भ में 'भ्रमण' से आप क्या समझते हैं ? कक्षा 7 के लिए भ्रमण स्थल की सूची तैयार करें।
5. विद्यार्थियों को भ्रमण पर ले जाने से पूर्व एवं दौरान आप किन महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखेंगे, उदाहरण के साथ उल्लेख करें।

टिप्पणी

इकाई 14 कार्य शिक्षा में कौशलों का विकास (प्रायोगिक कार्य)

संरचना

14.0 परिचय

14.1 अधिगम उद्देश्य

14.2 कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधियों के चयन के मानदण्ड एवं आधार

14.3 गतिविधियों का प्रदर्शन

14.3.1 माचिस के सिर वाली गुड़िया

14.3.2 रबड़ का खिलोना

14.3.3 माचिस की गाड़ियाँ

14.3.4 कार्ड बोर्ड से मास्क बनाना

14.4 सारांश

14.5 अन्त्य इकाई अभ्यास

14.0 परिचय

विद्यार्थियों का सामाजिक कार्यों में भाग लेना शिक्षा की एक बहुत बड़ी विशेषता है। विद्यार्थियों को जो भी ज्ञान दिया जाता है, या जो बोध करवाया जाता है वह व्याख्यानों से नहीं बल्कि दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले कामों से जोड़कर करवाया जाता है। प्रस्तुत इकाई के द्वारा आप जानेंगे कि कार्य शिक्षा के अन्तर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियों का चयन आप किन–किन आधारों पर करेंगे।

आप इस तरह की समझ भी प्राप्त करेंगे कि अपने विद्यालय के बच्चों के लिए किस तरह की गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। इस इकाई में आपको गतिविधियों की एक सूची भी दी जाऐगी जिनका आयोजन एवं संचालन विद्यालय में करवाया जा सकता है। आपकी सुविधा के लिए कुछ गतिविधियों की आयोजन संबंधी युक्तियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं।

14.1 अधिगम उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के माध्यम से आप –

टिप्पणी

1. कार्य शिक्षा के माध्यम से कौशलों के विकास की सम्बद्धता के प्रति समझ बना सकेंगे,
2. अपने विद्यालय में कार्य शिक्षा के अन्तर्गत करवाई जा सकने वाली गतिविधियों की विस्तृत सूची तैयार कर सकेंगे,
3. गतिविधियों के चयन के आधार, मापदण्ड एवं औचित्य की व्याख्या कर सकेंगे,
4. विभिन्न गतिविधियों के आयोजन व संचालन में प्रयुक्त सामग्री, प्रविधि व सोपानों का परिचय प्राप्त करेंगे,
5. गतिविधियों के साथ अन्य पाठ्यचर्यक विषयों के समन्वयन का कौशल अर्जित कर पायेंगे,
6. विभिन्न गतिविधियों का आयोजन एवं प्रदर्शन कर सकेंगे।

14.2 कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधियों के चयन के मानदण्ड एवं आधार

अपने विषय के अन्तर्गत जब भी आप गतिविधियों का चयन करते हैं आप कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में अवश्य रखते होंगे क्योंकि –

- आपकी कक्षा में बैठे विद्यार्थियों के अनुभव तरह–तरह के हैं,
- उनकी रूचि, क्षमताएँ, रूझान एक समान नहीं हैं,
- उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि भी भिन्न–भिन्न है,
- आपके अनुभवों व कौशल आधारित ज्ञान की अपनी एक सीमा है,
- आपके परिवेश में उपलब्ध संसाधनों की भी सीमा होगी,

बहुत से ऐसे अन्य बिन्दु हैं जिनके आधार पर अपने विद्यालय के लिए तरह–तरह के कार्य कलापों की योजना बनाते हैं। नीचे ऐसे ही कुछ बिंदु दिए जा रहे हैं जिनको ध्यान में रखना आवश्यक है :–

- **कार्य शिक्षा के उद्देश्य** – सर्वप्रथम यह ध्यान रखना आवश्यक है कि करवाए जाने वाले कार्य कलाप में 'कार्य शिक्षा' के उद्देश्य निहित हों। कार्य शिक्षा का प्रत्येक कार्य–कलाप सोद्देश्य और अर्थपूर्ण होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि हर कार्य कलाप से सभी उद्देश्यों की पूर्ति होती हों।
- **बच्चों की पृष्ठभूमि** – कार्य शिक्षा के कार्य कलापों का चयन करते समय हमारे लिए उन बच्चों के सामाजिक, सांस्क तिक व आर्थिक परिवेश की जानकारी व समझ बहुत आवश्यक है जिन बच्चों से कार्य कलाप करवाए जाने हैं।

- **बच्चों का स्तर, रुचि एवं आवश्यकताएँ** – कार्य कलाप का चयन और बच्चों का शारीरिक, मानसिक विकास दोनों का आपस में गहरा संबंध है।

  शारीरिक व मानसिक क्षमता के साथ–साथ बच्चों की रुचि व आवश्यकताएँ भी महत्त्वपूर्ण है। बच्चे यदि बागवानी के कार्यकलापों में अधिक रुचि ले रहे हैं तो बागवानी से ही जुड़ी कुछ ऐसी गतिविधियाँ ले सकते हैं जो बहुउद्देशीय हों।

- **समय व स्थान की उपलब्धता** – हर प्रकार के कार्यकलाप के लिए एक निश्चित समय व उपयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है। 'समय' की जरूरत को दो कोणों से देखा जा सकता है –

प्रथम– किसी कार्यकलाप विशेष के लिए कितना समय चाहिए।

द्वितीय – कौन–सा कार्यकलाप कब करवाया जाए ?

दोनों बिन्दुओं पर आप सरलतापूर्वक विचार कर सकते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर आप निश्चित रूपेण यह तय कर पायेंगे कि अमुक गतिविधि को कितना समय चाहिए। यहां गतिविधि की प्रकृति के साथ–साथ करने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी महत्वपूर्ण है।

उदाहरण के तौर पर 'विद्यालय परिसर के गमलों पर गेरू रंगने' की गतिविधि के लिए आपने यदि एक घंटा निश्चित किया है तो यह अवश्य सोचा होगा कि हमारे पास कितने गमले हैं; कितने विद्यार्थी है और गमले रंगने की सामग्री जैसे कूची इत्यादि कितनी हैं और गेरू घोलने की तैयारी भी इसी एक घंटे की अवधि में सम्मिलित है अथवा उसके लिए अलग से समय निश्चित किया गया है, क्या प्रत्येक विद्यार्थी एक–एक गमले पर रंग करेगी/करेगा अथवा यह एक सामूहिक कार्यकलाप होगा ? इन सब बिन्दुओं के आधार पर गतिविधि की समयावधि के चयन हेतु महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

'स्थान' के संबंध में आप कुछ बिन्दुओं पर विचार कर सकते हैं जो प्रश्न के रूप में नीचे दिए जा रहे हैं :

- क्या चुना गया स्थल बच्चों को शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है ?
- वैयक्तिक व सामूहिक कार्यकलापों के लिए बच्चों को बैठाने, चलने–फिरने आदि की सुविधा है या नहीं ?
- बच्चों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री को सुविधापूर्वक रखा जा सकता है या नहीं ?
- कार्य कलाप के दौरान आपके द्वारा चल–फिर कर मॉनीटरिंग की जा सकती है अथवा नहीं और आप द्वारा कार्य का प्रदर्शन करते समय सभी बच्चे सरलतापूर्वक देख पा रहे हैं या नहीं ?

टिप्पणी

- **संसाधनों की उपलब्धता** – शिक्षक की इच्छा है वह अपने विद्यार्थियों को सीपियों की सहायता से कुछ कार्य करवाए क्योंकि उसकी शिक्षिका ने भी सीपियों का कार्य करवा कर उसके अंदर की रचनात्मक शक्ति व सौन्दर्यानुभूति का विकास किया था। इसी सोच के रहते वह विद्यार्थियों को तरह–तरह की आकृति व आकार वाली सीपियाँ लाने के लिए कहती हैं। आप अगले दिन के दृश्य का अनुमान कर सकते हैं। जी हाँ 40 बच्चों की संख्या में से मात्र 3 विद्यार्थी सीपियाँ लाए हैं वह भी बहुत कम।

शिक्षिका निराश है। दो दिन का समय देती है दो दिन बाद भी स्थिति वही है। उसके अनुसार–

➢ बच्चे इतनी सुन्दर गतिविधि क्यों नहीं करना चाहते ?

➢ अभिभावक सामग्री जुटाने में मदद क्यों नहीं करते ?

आप तो ऐसा नहीं सोच रहे न ? आपने सही समझा, संसाधन व सामग्री का चुनाव स्थानीय परिवेश से हटकर कैसे हो सकता है। नदी, समुद्र आदि के किनारे बसे कस्बों ाहरों के बच्चों से तो अपेक्षा की जा सकती है सीपियाँ इकट्ठी करने की परन्तु हर क्षेत्र के बच्चे तो प्रत्येक वस्तु का जुगाड़ नहीं कर सकते। हाँ, यह बात जरूर है कि सीपियां खरीदी भी जा सकती हैं पर क्या हर बच्चे की सामर्थ्य है खरीदने की ? दूसरी महत्वपूर्ण बात, खरीदकर एकत्रित की गई सामग्री द्वारा क्या कार्यकलाप में निहित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकेगा ?

प्रगति जाँच -1

1. कार्य शिक्षा के संदर्भ में गतिविधियों का चयन करते समय आप किन मुख्य बिन्दुओं को ध्यान में रखेंगे। उदाहरण सहित अपने विचार लिखें।

   ....

   ....

   ....

2. पहाड़ी क्षेत्र में स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 6, 7 व 8 के दो–दो गतिविधियाँ सुझाएँ, आप यह भी बताएँ कि इन गतिविधियों के चयन का क्या आधार है ?

   ....

   ....

   ....

14.3 गतिविधियों का प्रदर्शन

टिप्पणी

गतिविधियों के आयोजन हेतु आप भिन्न–भिन्न प्रविधियों, तकनीकों व सामग्रियों का प्रयोग करेंगे। यद्यपि किसी भी गतिविधि के संचालन की विधि स्थान व व्यक्ति के अनुभवों के आधार पर भिन्न होगी, तथापि प्रस्तुत इकाई में कुछ गतिविधियाँ प्रस्तावित हैं–

14.3.1 माचिस के सिर वाली गुड़िया

अपेक्षित अधिगम–परिणाम

- पुरानी चीजों का नया उपयोग सीख सकेंगे।
- हाथ और आँखों का समन्वय स्थापित होगा।
- कागज़ पर रंग की सहायता से तरह –तरह की शक्लें बनाना सीख सकेंगे।
- कहानी सुनाना, नए–नए शब्द बनाना सीखेंगे।
- नाटक करना सीख सकेंगे।

उपकरण एवं सामग्री

❖ पुराने अखबार।

❖ मोटी डोरी या सुतली।

❖ माचिस का बाहरी खोखा।

❖ झाड़ू की सींक।

❖ गत्ते पर बनी रंगीन चेहरा।

❖ फेविकोल।

कैसे बनाएँ–

➢ माचिस के खोखे की लंबी मध्य रेखा पर फेवीकोल से सींक को चिपकाएं। सींक का दो–तिहाई भाग माचिस के खोखे के बाहर निकला हो। बाद में इस सींक पर ारीर का मध्य भाग चिपकेगा।

➢ कार्ड के चेहरे को माचिस पर चिपका दें।

➢ अखबार की 7 से.मी. से 12 से.मी. चौडाई की लंबी–लंबी पट्टियां काटें।

➢ एक पट्टी को पैंसिल पर कस कर लपेटें।

➢ कागज़ की आखिरी तह को फेविकाल से चिपकाएं। फिर पैंसिल को दबा कर बाहर निकाल दें।

टिप्पणी

- अखबार की ऐसी नौ नलियां बनाएं।
- हाथ बनाने के लिए दो नलियों में से डोरी को पिरोएं। हथेली वाले सिरे पर धागे में गाँठ बाँध दें।
- डोरी के मध्य भाग को गर्दन के स्थान पर सींक से बाँधें। बाकी डोर में दो और नलियां पिरोकर दूसरा हाथ बनाएं। दूसरी हथेली की जगह पर भी गाँठ लगाएं।
- इसी प्रकार टाँगें और पैर भी बनाएँ। टाँगों की डोरी में ारीर वाली नली में से पिरोकर उन्हें गर्दन के स्थान पर सींक से बाँध दें। (अगर छड़ी से चलने वाली कठपुतली बनाना चाहते हैं तो एक लम्बी व मजबूत छड़ का उपयोग करें।)
- रंगीन कागज़ या कपड़ों की कतरनों से कठपुतली के कपड़े भी बनाए जा सकते हैं।

14.3.2 रबड़ का खिलोना

अपेक्षित अधिगम–परिणाम

- अनुपयोगी वस्तुओं से खिलौने बनाने की ललक पैदा होगी।
- लम्बाई–चौडाई का ज्ञान होगा।
- विभिन्न प्रकार के आकार बनाने आ जाएँगे।
- अपनी रुचि के नए खेलों की कल्पना कर सकेंगे।

उपकरण एवं सामग्री

- रबड़ की एक पुरानी पप्पल।
- एक परकार (कम्पास)।
- बालपैन की खाली रिफल।
- बाँस की पतली डंडी।
- पतला मजबूत धागा।
- मोटा धागा।
- माचिस की जली तीलियाँ।
- चाकू।
- पुराने अखबार की गड्डी जिस पर रख कर रबर को काटा जा सके। (रबर काटने से चाकू की धार खराब नहीं होगी)।

कैसे बनाएँ-

- पुरानी (काम न आने वाली) हवाई चप्पल से एक 5 से.मी. चौड़ी पट्टी काटें।
- इसी पट्टी में से v आकार के टुकड़े काटें (जितने निकल सकते हों।)
- कम्पास की नोक से टुकड़ों के दोनों सिरों में v एक–एक छेद करें। चित्र में दिखाए अनुसार छेद थोड़ तिरछे और अंदर की ओर हों।
- बॉलपेन की रिफिल के दो टुकड़े कर लें। और इन्हें v आकार के सिरों में किए गए छेदों में डाल दें।
- मजबूत और पतले धागे के 125 से.मी. लंबे दो टुकड़े लें। दोनों के एक–एक सिरे को बांस की डंडी के सिरों पर कस कर बाँधें। डंडी के बीचों बीच एक खाँचा बनाएँ। इसमें मोटे धागे का छल्ला बाँधें (खांचे से छल्ला इधर–उधर भागेगा नहीं)।
- धागों के दूसरे सिरों को रिफिल के टुकड़ों में से पिरो कर बाहर निकालें। अब उनमें चित्र में दिखाए अनुसार एक–एक माचिस की तीली बाँध दें।
- बीच के छल्ले को कील से लटका दें।
- अब दोनों तीलियों को एक–एक हाथ में पकड़ें। उन्हें हल्के से खींचे जिससे धागों में कुछ तनाव पैदा हो। अब धागों को बारी–बारी से खींचें–बाएं, दाएँ, बाएं, दाएँ। आप देंखेंगे कि रबर का v अब ऊपर चढ़ रहा है। धागों को ढीला छोड़ने पर रबड़ का v सरक कर नीचे आ जाता है। इस क्रिया को दोहराएँ।

टिप्पणी :– अब रबड़ के v पर एक मधुमक्खी या तितली का चित्र चिपका सकते हैं। डंडी के बीच में एक फूल भी लटका सकते हैं। या फिर मेंढक और मक्खी या छिपकली और कीड़े की जोड़ी के चित्र चिपका सकते हैं। जब वे ऊपर नीचे आएँगे तो ऐसा लगेगा एक दूसरे का पीछा कर रहे हैं।

14.3.3 माचिस की गाड़ियाँ

अपेक्षित अधिगम–परिणाम

- अनुपयोगी वस्तुओं से खेल–खिलौने बनाना सीख सकेंगे।
- कैंची से भिन्न–भिन्न आकार काटाना सीख सकेंगे।
- समूह में कार्य करना सीख सकेंगे।
- यातायात के साधनों पर चर्चा कर सकेंगे।
- कार्य करने के बाद चीजों को व्यवस्थित ढंग से रखना सीख सकेंगे।

उपकरण एवं सामग्री

- माचिस की डिब्बियाँ।
- कैंची।
- रंगीन कागज के टुकड़े।

छोटी गाड़ी

- एक माचिस की दराज और ढ़ाई माचिस की तीलियाँ (जली हुई)।

बड़ी गाड़ी

- दो माचिस की दराजें और दो माचिस की डिब्बियाँ।

जीप

- एक माचिस की दराज और एक माचिस की डिब्बी।

सभी के लिए

- पहियों के लिए कार्ड शीट।
- शीशा बनाने के लिए पारदर्शी झिल्ली जैसा कागज।

कैसे बनाएँ–

- माचिस का एक खोखा लें। उसकी खुली ओर एक पारदर्शी झिल्ली कागज चिपका दें। यह शीशे (विंडस्क्रीन) का काम करेगी।
- खोखे के ऊपर, नीचे और मसाले वाली सतहों पर रंगीन कागज चिपका दें।
- अब एक खाली माचिस लें और उसकी दराज को लगभग एक तिहाई खोंले। माचिस को अब उल्टा करकें। थोड़ा फेविकोल लगाएँ जिससे दराज अपनी जगह से सरके/हिले नहीं।
- इस पर भी ऊपर वाली माचिस के रंग का ही कागज चिपकाएँ।
- अब चित्र में दिखाए गए तरीके से खोखे को पूरी माचिस पर चिपकाएँ।
- कार्ड शीट से गोल–गोल पहिए काटे। पहिए इस पर चिपका दें। कागज की नेमप्लेट लगा सकते है। लाल रंग के बटन की हेडलाईट लगा सकते हैं।

ट्रक

- दो खोखे लीजिए और चित्र में दिखाए अनुसार काटें। मसाले वाली सतहों को वैसे ही रहने दें।

- दराज को दिखाए गए चित्र के अनुसार एक कटे कुए खोखे में फँसाएँ। इससे ट्रक का इंजन और ढाँचा बन जाएगा।
- ड्राइवर का केबिन बनाने के लिए दूसरे खोखे को इंजन वाले हिस्से पर चिपकाएँ। इस खोखे के सामने वाला कुछ भाग काट कर ड्राइवर की खिडकी बनाएं। अब नीचे की ओर निकली हुई मसाले की सतह को काट दें।
- पूरे मॉडल पर रंगीन कागज की पट्टियाँ चिपकाएँ।

पुराने मोजे से कठपुतली या गुड़िया बनाना

अपेक्षित अधिगम–परिणाम

- गुड़िया के परिधान बनाने के लिए काम में आने वाले वस्त्र की पहचान कर सकेंगे।
- गुड़िया को नाप सकेंगे।
- आकार एवं नाम के अनुसार कपड़ा काट सकेंगे।
- गुड़िया के संबंध में कोई कहानी की कल्पना कर सकेंगे।

सामग्री एवं उपकरण

- नायलॉन के पुराने मोजे।
- ऊन या रूई।
- कतरने (कुछ बड़ी, कुछ छोटी)
- सलमा–सितारे, मोतियाँ आदि।
- फेविकोल
- सुई–धागा, कैंची।
- रबर बैंड।
- स्केच पैंन।

कैसे बनाएँ–

- नायलोन के मोजों का जोड़ा लीजिए।
- ऊपरी हिस्से को छोड़कर बाकी हिस्से में रूई भर दीजिए।
- ऊपरी हिस्से को रबर बैंड से बाँध दीजिए।
- एड़ी पर रबड़ लगाने के बाद थोड़ी जगह छोड़कर फिर से एक रबड़ लगाएँ।

- आपने मोजे के अब तीन भाग बना दिए हैं।
- अब कपड़े की कतरने पर इच्छानुसार आँखे, नाक, होठ आदि बनाकर मोजे के ऊपरी हिस्से पर चिपकाएँ या टाँकें।
- कतरनों से लहंगा–कुर्ता/सलवार कमीज, चुन्नी बनाकर पहना दें।
- बिन्दी जरी आदि से सजा दें।

स्व– मूल्यांकन

- आपकी गुड़िया उत्तर–प्रदेश की लगे इसके लिए आप गुड़िया को क्या परिधान पहनाएँगे ?
- गुड़िया/गुड्डे का नाप लेते समय क्या क्रम अपनाएँगे ?
- किसी कहानी की रचना करें।

14.3.4 कार्ड बोर्ड से मास्क बनाना

अपेक्षित अधिगम–परिणाम

- इस प्रक्रिया में उपयुक्त सामान की पहचान कर सकेंगे।
- कहानी –कविता एवं अन्य स्थितियों में मॉस्क के उपयोग को जान सकेंगे।
- आँख, नाक आदि का त्रि–आयामी उपयोग जान सकेंगे।

सामग्री एवं उपकरण

- कार्ड बोर्ड शीट।
- फेविकोल
- कैंची।
- पोस्टर रंग/ब्रुश।

कैसे बनाएँ–

- कार्ड बोर्ड शीट लीजिए। एक बड़ी प्लेट की सहायता से उस पर गोला खींचिए। इस गोले को कैंची की सहायता से काट लीजिए।
- अपने मन पसंद का कोई भी रंग इस पर कर दीजिए।
- आँख, कान, नाक, ओंठ बनाने के लिए कार्ड बोर्ड के अलग टुकड़े काटिए।
- यदि बिल्ली का मॉस्क बनाना है तो कान की आक ति में काटे। नाक त्रिभुज की

आकृति में, आँखें गोलाकार और बालों के लिए गोले पर ही छोटे –छोटे कट दें दीजिए।

- ➢ इनको इच्छानुसार रंग कर दीजिए।
- ➢ फेविकोल की मदद से सभी हिस्से उपयुक्त स्थान पर चिपका दें।

जोकर या अन्य मुखौटे बनाने के लिए आँख, नाक, कान आदि की आक तियों में परिवर्तन कर सकते हैं जैसे – छोटी–छोटी आँखें, लंबे–लंबे कान, मोटे–मोटे नीचे की ओर मुड़े होंठ।

नोट

- आँखों के लिए बिंदी का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- नाक की जगह टूथपेस्ट का ढक्कन चिपकाया जा सकता है।
- बालों की जगह जूट का उपयोग कर सकते हैं।
- होठों के लिए आईसक्रीम वाली चम्मचें प्रयोग में लाई जा सकती हैं।
- यदि पोस्टर कलर उपलब्ध न हो तों रंगीन कागज भी चिपकाया जा सकता है।

स्व– मूल्यांकन

- ❖ यदि एक बिंदी छोटी कट जाए तब आप क्या करेंगे ?
- ❖ नाक, कान, आँख आदि चिपकाते समय क्या सावधानियाँ बरतेंगे ?
- ❖ इन मुखौटों की सहायता से राष्ट्रीय एकता की भावना जाग त करने हेतु कोई कविता या कहानी बनाएँ।

प्रगति जाँच -2

1. स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करते हुए दरी बनाने की गतिविधि के सोपान लिखें।

   ....

   ....

   ....

2. गतिविधिका प्रदर्शन करते समय किन–किन बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहेंगे, कोई पाँच बिंदु सुझाएँ।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

14.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आपने जाना कि आप अपने विद्यालय की आवश्यकताओं को देखते हुए किस तरह से कार्य शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावशाली योजना बना सकते हैं। आपने उन बिन्दुओं के प्रति समझ बनाई जो किसी भी गतिविधि के चयन का प्रमुख आधार होते हैं जैसे विद्यार्थियों की रूचि, शारीरिक मानसिक क्षमताएँ, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, संसाधनों की उपलब्धता, सहयोगियों का दृष्टिकोण, अभिभावकों का दृष्टिकोण एवं सबसे महत्वपूर्ण है आपका स्वयं का दृष्टिकोण।

इस प्रकार से आपने जाना कि कार्य शिक्षा की गतिविधि प्रस्तावित होती है, वे सुझाई जा सकती है परन्तु किसी विद्यालय विशेष के लिए किसी अन्य संस्था से निर्धारित नहीं की जा सकती।

आपने यह भी देखा कि उत्पाद निर्माण के लिए किस–किस प्रकार की सामग्री की आवश्यकता होती है और उसके निर्माण की प्रक्रिया के क्या चरण होते हैं।

14.5 अन्त्य इकाई अभ्यास

- ❖ पुराने कपड़े, मोजे, रूई इत्यादि सामग्री की मदद से कठपुतली बनाने की प्रक्रिया प्रदर्शित करें।
- ❖ 12 वर्षीया मध्यम वर्गीय बालिका हेतु संतुलित आहार की तालिका बनाएँ।
- ❖ शिकंजी बनाने में प्रयुक्त सामग्री व प्रक्रिया क्रमानुसार लिखें।

इकाई 15 विद्यालय में कार्य शिक्षा एवं समुदाय

टिप्पणी

संरचना

15.0 परिचय

15.1 अधिगम उद्देश्य

15.2 कार्य शिक्षा के संदर्भ में समुदाय की भूमिका

15.3 कार्य शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु सामुदायिक संसाधनों की पहचान एवं उपयोग

15.3.1 सीखने सिखाने की प्रक्रिया में समुदाय का सहयोग

15.3.2 बच्चों एवं विद्यालय के मूल्यांकन की प्रक्रिया में समुदाय का सहयोग

15.4 कार्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में अभिभावकों तथा समुदाय के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन

15.5 सारांश

15.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.7 अंत्य इकाई अभ्यास

15.0 परिचय

क्या आपने कभी इस कथन पर ध्यान दिया है, "प्रभावोत्पादक शिक्षा केवल विद्यालय, परिवार और समाज की तिहरी जिम्मेदारी द्वारा ही संभव है।" यह कथन इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर संकेत कर रहा है कि बच्चों की शिक्षा पूरी तरह से विद्यालय का उत्तरदायित्व नहीं है अपितु उसमें जनभागीदारी बहुत आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आप जानेंगे कि समुदाय से हमारा क्या अभिप्राय है।

साधन संपन्नता और साधनहीनता, दोनों ही स्थिति में विद्यालय किस प्रकार समुदाय का सहयोग आमन्त्रित करता है और कार्य शिक्षा के संदर्भ में विशेष रूप से सामुदायिक सहयोग क्यों और किस प्रकार से लेना चाहिए। आप यह भी जानेंगे कि अभिभावकों को कार्य शिक्षा के महत्व से किस प्रकार से लेना चाहिए। आप यह भी जानेंगे कि अभिभावकों को कार्य शिक्षा के महत्व से किस प्रकार परिचित करवाया जाए और विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में कार्य शिक्षा के संदर्भ में अभिभावकों से क्या–क्या अपेक्षाएँ है।

टिप्पणी

15.1 अधिगम उद्‌देश्य

प्रस्तुत इकाई के उद्‌देश्य इस प्रकार है –

- समुदाय की अवधारणा से अवगत करवाना,
- सामुदायिक सहयोग की महत्ता का वर्णन करना,
- समुदाय में उपलब्ध संसाधनों की पहचान करना,
- सामुदायिक संसाधनों को आमंत्रित करने की युक्तियों का उल्लेख करना,
- अभिभावकों को कार्य शिक्षा के महत्व से परिचित करने के तरीकों का परिचय देना।

15.2 कार्य शिक्षा के संदर्भ में समुदाय की भूमिका

विद्यालयी शिक्षा में कार्य शिक्षा के लिए सामुदायिक सहयोग लेने से पहले समुदाय की परिकल्पना पर विचार करना होगा।

समुदाय एक निश्चित भू–भाग पर बसने वाले लोगों का समूह है जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए वहां उपलब्ध सुविधाओं का समान रूप से उपभोग करता है और साथ ही एक–दूसरे पर निर्भर रहता है।

समुदाय का वर्णन बहुत से लोगों के एक समूह से लेकर पूरी दुनिया तक कुछ भी हो सकता है। समुदाय की परिकल्पना हर उदाहरण के साथ बदलती रहती है। फिर भी, हम यह समझ पाते हैं कि समुदाय की परिकल्पना में निम्नलिखित शर्तें निहित हैं –

- ➢ समुदाय अलग–अलग व्यक्तियों से मिलकर बनता है, जैसे जीव अलग–अलग कोशिकाओं से मिलकर।
- ➢ जाने अंजाने सब व्यक्ति एक सांझे लक्ष्य से बंधे होते हैं।
- ➢ समुदाय के सदस्यों के बीच कोशिकाओं और जीव के बीच संबंध की तरह एक बंधन होता है और आदान–प्रदान का सिलसिला होता है।
- ➢ एक निर्धारित लक्ष्य के लिए सभी व्यक्ति एकजुट होकर प्रयास करते हैं और अनुभवों को बाँटते हैं।

महात्मा गांधी ने विद्यालय और समुदाय को नजदीक आने पर बल दिया, ''यदि शिक्षा के द्वारा नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करनी है तो दोनों अलग–अलग नहीं रह सकते।''

हम सभी जानते हैं कि अध्यापकों और अभिभावकों के बीच सामाजिक दूरी कम होने से

टिप्पणी

शिक्षण प्रक्रियाएं सम द्ध होती है। समुदाय को बच्चों की जरूरतों के बारे में उतना ही चिंतित होना चाहिए जितना कि एक विद्यालय को। ऐसा किसी भी स्थिति में मान्य नहीं होना चाहिए कि समाज बच्चे के विकास व शैक्षिक उपलब्धियों के लिए विद्यालय को पूरी तरह से उत्तरदायी मान लें। विद्यालय समुदाय से अपेक्षा करता है कि–

- बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जाए,
- विद्यालय के प्रति उनकी समयबद्धता का ध्यान रखा जाए,
- विद्यालयी शैक्षिक प्रक्रियाओं की मॉनीटरिंग में हिस्सेदारी बढ़ाए,
- कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों के चयन में सुझाव प्रदान करें,
- विद्यालय की समय सारणी में कार्य शिक्षा हेतु आवश्यकता समय सुनिश्चित करने के संदर्भ में अपने मत प्रस्तुत करें,
- कार्य शिक्षा की प्रयोगशाला स्थापित करने में सक्रिय योगदान दे। उदाहरण के लिए आवश्यक उपकरणों व सामग्री के क्रय–विक्रय में भागीदारी, उनके रखरखाव की जानकारी का संप्रेषण आदि।
- कार्य शिक्षा के अन्तर्गत भ्रमण के आयोजन में सहयोग देना।
- गतिविधियों के प्रदर्शन में सहयोग।
- विद्यार्थियों के आकलन व मूल्यांकन में सक्रिय भागीदारी।

उपर्युक्त बिंदुओं के अतिरिक्त आप बहुत से ऐसे क्षेत्रों की संभाव्यता पर विचार कर सकते हैं जहां समुदाय की भागीदारी को आमंत्रित कर कार्य शिक्षा के क्रियान्वयन को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। यहां पर एक और बिन्दु भी महत्वपूर्ण है वह यह कि विद्यालय समुदाय से अपेक्षाएं ही न करें अपितु समुदाय के लिए भी अपनी सेवाएं उपलब्ध करवाएं अर्थात परस्पर क्रिया के माध्यम से एक दूसरे के पूरक बने। अध्यापकों और अभिभावकों के बीच सामाजिक दूरी कम होने से शिक्षण प्रक्रियाएं समृद्ध होती हैं। विद्यालय एक अलग संस्था न होकर समाज का एक हिस्सा बने जिसके लिए विद्यालय को अपने द्वार समाज के लिए खोलने होंगे।

विद्यालय भी समाज के लिए बहुत सी गतिविधियाँ आयोजित कर सकता है। जैसे

- कार्य शिक्षा के अन्तर्गत इस तरह की गतिविधियों का चयन करें जिनके माध्यम से समुदाय में सार्वजनिक पेय जल स्थानों की सफाई, गड्ढों का भराव, सार्वजनिक उद्यानों में बागवानी, कम्पोस्ट खाद का प्रबंधन आदि किया जा सके।
- शिल्पकारों से साक्षात्कार का आयोजन करवाया जाए जिससे उनकी शिल्प को तो पहचान मिले ही और उनका आत्मविश्वास भी बढ़े।
- विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय न जा पाने वाले बच्चों व पौढ़ निरक्षरों की संख्या का पता लगवाने के लिए सर्वेक्षण करवाया जा सकता है। केवल सर्वेक्षण करवाना ही पर्याप्त

टिप्पणी

नहीं होगा अपितु कुछ इस तरह की गतिविधियाँ आयोजित की जाएं जिनके अन्तर्गत प्रौढ शिक्षा केन्द्रों का आयोजन व संचालन हो तथा विद्यालय न जा पाने वाले बच्चों को विद्यालय जाने के लिए अभिप्रेरित किया जाए।

- पल्स पोलियो जैसे अभियानों को सफल बनाने में विद्यालय स्थान देने के साथ–साथ अध्यापकों व विद्यार्थियों का सहयोग भी प्रदान करे।
- सामाजिक उत्सवों के आयोजन में साजसज्जा संबंधी सहभागिता दर्ज करें।
- श्रमजीवियों के महत्व से विद्यार्थियों को इस तरह से परिचित करवाया जाए कि वे उनके प्रति सम्मान की भावना पैदा करें।
- स्थानीय दस्तकारी के काम की प्रदर्शनी का आयोजन करने में विद्यालय अग्रणी भूमिका का परिचय दें।

उपर्युक्त बिंदु उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किए गए हैं। आप अपने समुदाय की जरूरतों को बेहतर रूप से जानते हैं। अतः आपसे अपेक्षा है कि सामुदायिक संसाधनों का उपयोग तो करें ही परन्तु समाज के लिए भी अपना योगदान सुनियोजित रूप से प्रस्तुत करें।

15.3 कार्य शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु सामुदायिक संसाधानों की पहचान एवं उपयोग

विद्यालयी व समुदाय के आपसी संबंध में सबसे अहम् बात यह है कि समुदाय व परिवेश को संसाधन के रूप में देखा जाए। ग्रामीण और ाहरी दोनों ही पर्यावरण और समुदाय पाठ्यचर्या निर्माण के महत्वपूर्ण संसाधन हैं।

ग्रामीण पर्यावरण की विराटता और उनका शांत खुलापन जिसमें खेल, जंगल, तालाब, नदी, पेड़, फलों के बगीचे, पक्षी, पशु आदि सब सम्मिलित है, पाठ्यचर्या के मुख्य घटक हैं। इसी प्रकार व्यस्त व्यापार केन्द्र, औद्योगिक परिसर, छोटे–बड़े आवास समूह, झुग्गी–झोपड़ी वाली बस्तियाँ अनाज मंड़ी, सब्जी मंड़ी, मवेशीखाने, सांस्कृतिक केन्द्र, नृत्य–संगीत, नाट्यशालाएँ, कुश्ती–व्यायाम के अखाड़े सभी जगह से पाठ्यचर्या निर्माण के अनेक तत्व मिलते हैं।

15.3.1 सीखने सिखाने की प्रक्रिया में समुदाय का सहयोग

पाठ्यक्रम में बहुत से क्रियाकलाप एवं खेल आदि हैं जो बच्चों के माता–पिता द्वारा करवाए जा सकते हैं। भाषा, सामाजिक अध्ययन, कला के अंतर्गत बहुत सी विषय–वस्तु को सभी तो नहीं पर कुछ बच्चों के माता–पिता अवश्य ही करवा पाने में सक्षम होंगे तथा करवाने में गौरव का अनुभव भी करेंगे। माता–पिता का पढ़ा–लिखा होना जरूरी नहीं है। अनपढ़ माता–पिता भी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सहयोग दे सकते हैं। गाँव के बड़े–बूढ़े बच्चों को ऐतिहासिक एवं गाँव की छोटी से बड़ी बात बताने में सक्षम हैं। ऐसे ही गाँव के मिस्त्री,

कुम्हार, बढ़ई तथा अन्य कारीगर बच्चों को छोटे से छोटा व बड़े से बड़ा कार्य तथा सुंदर वस्तुएं बनाने का आनंद बच्चों को प्राप्त करा सकते हैं। मिट्टी के खिलौने बनाने, स्थानीय परिवेश से भली–भाँति जानकारी देने का कार्य, बस्ती/ गाँव/ शहर के बड़े–बूढ़ों से अच्छा और कौन सा स्रोत हो सकता है?

- आप बच्चों को भ्रमण पर ले जाना चाहते हैं। अकेले ले जाने में कठिनाई महसूस करते हैं। ऐसे में क्या आप भ्रमण को स्थगित कर देंगे या फिर किसी अभिभावक का सहयोग आमंत्रित करना पसंद करेंगे।
- स्थानीय परिवेश में बहुत–से ऐसे पेड़–पौधे हैं जिनकी आपको पहचान नहीं, ाायद और शिक्षकों को भी नहीं। आप कक्षा में बच्चों से जानकारी लेने में हिचकिचाएँ नहीं कि किसके माता–पिता हमें वनस्पति जगत से अवगत करा सकते हैं।
- किसी प्रकार से आप यह जान गए हैं कि अमुक बच्चे के माता–पिता/भाई–बहन या अन्य रिश्तेदार सरल यौगिक क्रियाओं में निपुण हैं। आप उनका सहयोग ले सकते हैं।
- मेले–त्यौहार आदि के आयोजन में तो अभिभावकों की भूमिका की कोई सीमा ही नहीं है। सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए आप उनकी भूमिका एवं सहयोग के क्षेत्र व सीमाएं तय कर सकते हैं।

15.3.2 बच्चों एवं विद्यालय के मूल्यांकन की प्रक्रिया में समुदाय का सहयोग

सामान्यतः मूल्यांकन शब्द के द्वारा किसी भी वस्तु के मूल्य आंकने की प्रक्रिया का बोध होता है परन्तु शिक्षक होने के नाते हम इसके तकनीकी पक्ष को नहीं नकार सकते। बच्चों ने पढ़ाई, लिखाई, गणित में कितने अंक प्राप्त किए हैं यानि कि उन्हें इन विषयों में जो कुछ भी पढ़ाया गया है, क्या बच्चों ने उसे याद रखा है, कितना याद रखा है, सिर्फ यही जानना मूल्यांकन संबंधी प्रक्रियाओं का उद्देश्य नहीं है।

खासतौर पर जीवन जीने की कला मूल्यांकन के इस पारंपरिक स्वरूप से कहीं भिन्न एवं विस्त त है। मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों के विषय ज्ञान के बारे में सूचनाएं एकत्रित करना ही नहीं अपितु उनके व्यक्तित्व के विकास के बहुआयामी पहलुओं की जानकारी रखना भी है। इस जानकारी के आधार पर ही हमें व्यक्ति विशेष की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सामूहिक क्रियाकलापों का आयोजन करना चाहिए। इस प्रकार की मूल्यांकन प्रक्रिया में बच्चों के परिवार का सहयोग जरूरी है क्योंकि हमें इस विषय में यह देखना जरूरी है कि बच्चों के व्यवहार में क्या कुछ परिवर्तन पाया गया है ? क्या उनका बच्चा अपनी चीजें ठीक से रखता है और वह साफ–सुथरा रहता है, क्या वह बड़ों का आदर करता है और क्या वह अपने मित्रों व पड़ोसियों को गांव की सुविधाओं के बारे में जानकारी देता है ? इन सब बातों की जानकारी हमें बच्चों के माता–पिता/अभिभावकों व पास–पड़ोस से मिलती है। हमें इस प्रकार की जानकरी लेने में न तो हिचकिचाना चाहिए और न ही उनके द्वारा दी गई जानकारी पर अविश्वास प्रकट करना चाहिए।

टिप्पणी

प्रगति जाँच -1

1. 'समुदाय' को परिभाषित करें।

....

....

....

2. अपने विद्यालय की परिस्थितियों को देखते हुए उन योगदानों का उल्लेख करें जो आपके विद्यालय द्वारा समुदाय को दिए जा सकते हैं।

....

....

....

3. शहरी परिवेश में उपलब्ध कुछ ऐसे संसाधनों की पहचान करें जिनका उपयोग कार्य शिक्षा के संदर्भ में किया जा सके।

....

....

....

15.4 कार्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में अभिभावकों तथा समुदाय के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन

बहुधा देखा गया है कि विद्यालय की समय सारणी में कार्य शिक्षा को यथोचित समय दिया जाता है परन्तु व्यवहारिकता में कार्य शिक्षा के लिए निर्धारित सत्रों का आबंटन अन्य पाठ्यचर्यक विषयों के लिए कर दिया जाता है। तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि, "गणित व विज्ञान का पाठ्यक्रम बहुत अधिक है। ये विषय भी अपेक्षाकृत बहुत महत्वपूर्ण एवं कठिन हैं। अतः इन विषयों के लिए अधिक समय देने की आवश्यकता है।"

इस तर्क से तो यही स्पष्ट होता है कि कार्य शिक्षा को अन्य विषयों की तुलना में कम महत्वपूर्ण माना जाता है। क्या आप जानते हैं कि इस तर्क के पीछे किस तरह की मानसिकता कार्य कर रही है ? क्या यह विद्यालयी प्रशासन से जुड़ा मुद्दा है। अथवा समुदाय भी किसी न किसी रूप में इस व्यवस्था के लिए उत्तरदायी है ? स्थितियों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होगा कि विद्यालय के अध्यापकों के साथ–साथ कार्य शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण कहीं अधिक उदासीन है। उनका तर्क यह होता है कि –

''कार्य शिक्षा के अन्तर्गत करवाई जाने वाली गतिविधियाँ तो बच्चे घर पर कर ही लेते हैं उसके लिए विद्यालय के बहुमूल्य समय को क्यों व्यर्थ किया जाए। विद्यालय में तो सिर्फ पढ़ाई लिखाई की बात ही की जानी चाहिए।''

संभवतयाः अभिभावक 'पढ़ाई–लिखाई' के वास्तविक स्वरूप से परिचित नहीं है और वे पुस्तकीय ज्ञान को ही 'पढ़ाई–लिखाई' समझते हैं। ऐसे में कार्य शिक्षा के अध्यापकों का कर्तव्य बनता है कि वे अभिभावकों के लिए औपचारिक रूप से अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन करें जिनमें वे कार्य शिक्षा के महत्व का प्रतिपादन करें।

किसी भी अकादमिक सत्र में निम्नलिखित स्थितियाँ अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन हेतु चिन्हित की जा सकती है।

- **शिक्षक अभिभावक संघ की बैठकें**– ग्रामीणी एवं शहरी दोनों ही परिवेशीय व्यवस्था में विद्यालयों द्वारा शिक्षक अभिभावक संघ बनाए जाते हैं। विद्यालयों में इस संघ की नियमित बैठकें आयोजित की जाती है। इन बैठकों में अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के साथ–साथ कार्य शिक्षा के महत्व पर भी चर्चा की जा सकती है।
- **अभिभावक – अध्यापक बैठक (पी.टी.एम.)**– विद्यार्थियों की प्रगति का सिलसिलेवार ब्यौरा अभिभावकों तक पहुंचाने के लिए निश्चित समय नियतकर विद्यालयो ंमें अभिभावकों को आमंत्रित किया जाता है। इन बैठकों में आम तौर पर विद्यार्थी के व्यवहार, विशेष प्रदर्शन, उपलब्धियों व प्रगति के बारे में सूचित किया जाता है। अध्यापक इन बैठकों के माध्यम से भी कार्य शिक्षा की अवधारणा व अनिवार्यता को संप्रेि ात कर सकते हैं। उन्हें कार्य शिक्षा के वास्तविक स्वरूप का परिचय देते हुए कार्य शिक्षा के प्रति उनकी नकारात्मक सोच को बदल सकते हैं।
- **जननी क्लव की बैठकें** – बहुत से विद्यालयों में माताओं की सम्मिलित बैठकें आमंत्रित की जाती हैं। आपने देखा होगा कि पिता के स्थान पर अक्सर माताएं बच्चों को छोड़ने –लेने अथवा मध्यावकाश में उन्हें भोजन पहुंचाने का कार्य करती है। घर पर भी उनकी पढ़ाई, ग हकार्य आदि पर वे ही ध्यान देती हैं। चूंकि वे सतत् रूप से बच्चे की पढ़ाई से जुड़ी हुई हैं, अतः उनके क्लब बनाने और उनमें बच्चों की शिक्षा संबंधी बातें करना शिक्षा में गुणवत्ता में व द्वि करता है। जननी क्लब के माध्यम से भी समुदाय को कार्य शिक्षा के महत्व से परिचित करवाया जा सकता है। यदि किसी विद्यालय विशेष में जननी क्लब के स्थान पर पिता क्लब/ पिता मंडल आदि बनाए गए हैं तो उनके द्वारा भी अध्यापक अपना उद्देश्य पूरा कर सकते हैं।
- **होम विजिट (विद्यार्थी के घर जाना)** – आम तौर पर छोटे शहरों और एकल पाली वाले विद्यालयों में अध्यापक बच्चों की प्रगति के संदर्भ में उनके घर जाकर जांच पड़ताल/ संप्रेषण करते हैं जो विद्यालय की संवेदनशीलता का परिचायक है। महानगरीय परिवेश में स्थित विद्यालयों में ऐसे संपर्क कम ही बनाए जाते हैं। अध्यापक अन्य आवश्यक मुद्दों के साथ–साथ कार्य शिक्षा की महत्ता का विचार भी अभिभावकों तक संप्रेषित कर सकते हैं।

टिप्पणी

- **अनौपचारिक भेंट** – जिन समुदायों में विद्यालय व समुदाय की भौगोलिक दूरी बहुत अधिक नहीं है और विद्यालय के अध्यापक भी (सभी नहीं तो कुछ ही) उसी समुदाय से संबंध रखते हैं तो वे आते जाते अनौपचारिक रूप से भी अपने विचारों से अभिभावकों को अवगत करवा सकते हैं। संप्रे ण इतना प्रभावशाली हो कि अभिभावक इस बात की समझ स्थापित कर लें कि कार्य शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है।

15.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने समुदाय व विद्यालय की पारस्परिक निर्भरता के बारे जाना आपने समुदाय की परिभाषा के प्रति अपनी समझ बनाई और समुदाय की विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता को चिन्हित किया।

आपने जाना कि ग्रामीण व शहरी परिवेश में ऐसे बहुत से संसाधन हैं जिनका उपयोग 'कार्यशिक्षा' की गतिविधियों के आयोजन, संचालन व संवर्द्धन में किया जा सकता है। आपने उन शिल्पकारों, मानवीय संसाधनों की भी पहचान की जिन्हें विद्यालय में संदर्भ व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया जा सकता है।

इस इकाई के माध्यम से बनी समझ कार्य शिक्षा के संवर्द्धन के मार्ग खोल सकती है।

15.6 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- **इंडियाज क्राफ्ट ट्रेडीशन** (1980), कमला देवी चट्टोपाध्याय।
- **क्राफ्ट इन एजुकेशन** (1962), हंसराज भाटिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे।
- **तोत्तो–चान, तेत्सुको कुरायानागी** (अनुवाद, पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा), नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
- **थोड़ा साधन– घना प्रयोग**, विक्रम–ए–साराभाई, सामुदायिक विज्ञान केन्द्र, अहमदाबाद।
- **दिवा स्वप्न, गिजु भाई** (अनुवाद : सूरज प्रकाश), प्रकाश संस्थान, नई दिल्ली।
- **नई तालीम की ओर,** महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।
- **बाल भवन सोसाइटी, वार्षिक रिर्पोट,** (1985)
- **सीखने का आनंद,** विक्रम–ए–साराभाई, सामुदायिक विज्ञान केन्द्र, अहमदाबाद।
- **हरिजन,** महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।

टिप्पणी

15.7 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. ग्रामीण परिवेश के अभिभावक बच्चों की शिक्षा के प्रति सचेत रहें और उन्हें कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों से जोड़े, इसके लिए अध्यापक होने के नाते आप किस प्रकार के विशेष प्रयत्न करेंगे ?

2. कार्य शिक्षा के उन्नयन हेतु अभिभावकों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए आप किन–किन युक्तियों का सहारा लेंगे ?

3. आपके विद्यार्थियों के अभिभावक कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। उनका दृष्टिकोण बदलने के लिए आप उन्हें किन बिंदुओं पर विचार करने के लिए कहेंगे ? कोई चार बिंदु लिखें।

4. आपके विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक कठपुतली कलाकार हैं। विद्यालयी शिक्षा में उनका सहयोग किस प्रकार से लिया जा सकता है ?

4. Reflections on School education Vol. I | issue 1| राज्य भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

इकाई 16 कार्य शिक्षा में मूल्याँकन

संरचना

16.0 प्रस्तावना

16.1 अधिगम उद्देश्य

16.2 मूल्याँकन क्या है ?

16.2.1 आकलन और मूल्याँकन

16.2.2 सतत् और सारगर्भित मूल्याँकन

16.3 मूल्याँकन के उपकरण एवं प्रविधियाँ (तकनीकें)

16.3.1 अवलोकन

16.3.2 साक्षात्कार

16.3.3 जाँच सूची

16.3.4 संचयी अभिलेख

16.3.5 प्रश्न अनुसूची

16.3.6 छायाचित्र/पोर्टफोलियो

16.3.7 परियोजना कार्य

16.4 आकलन में पठन साथी की भूमिका

16.5 आकलन में अभिभावकों की भूमिका

16.6 विद्यार्थियों और अभिभावकों को प्रगति कैसे संप्रेि ात की जाए

16.6.1 संप्रेषण के तरीके

16.6.2 संप्रेषण के बिंदु

16.7 सारांश

16.8 संदर्भ ग्रंथ

16.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

16.0 प्रस्तावना

औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था हो अथवा अनौपचारिक, दोनों ही व्यवस्थाओं में शिक्षण अधिकगम प्रक्रिया एवं अन्य गतिविधियों के साथ–साथ एक और गतिविधि भी महत्वपूर्ण है और वह है परीक्षा यानी कि आकलन एवं मूल्यॉंकन की प्रक्रिया। मूल्यॉंकन की प्रक्रिया विद्यालयी शिक्षा में कितनी महत्वपूर्ण है इस का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अध्यापकों, की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थियों की दिनचर्या और यहां तक कि उनके अभिभावकों के कार्यकलाप भी 'मूल्यॉंकन' की तिथियों एवं स्वरूप के अनुसार तय होने लगे हैं, विशेष रूप से दसवीं और बारहवीं कक्षा की परीक्षा के संबंध में। आप मूल्यॉंकन के इस स्वरूप पर प्रश्न करना चाहेंगे।

प्रस्तुत इकाई में आकलन एवं मूल्यॉंकन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके अन्तर को चिन्हित किया गया है। विद्यालयी शिक्षा के भिन्न–भिन्न सोपानों में सतत् एवं सारगर्भित मूल्यॉंकन की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। आकलन एवं मूल्यॉंकन हेतु किन–किन उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए और उनके उपयोग में किस तरह की सावधानियॉं बरतनी चाहिए, इसका भी उल्लेख आपको इस इकाई में मिलेगा।

कार्य शिक्षा के संदर्भ में 'अवलोकन' के आधार पर विद्यार्थियों की प्रगति को कैसे आँका जाए और किस तरह से प्राप्त बिंदुओं को दर्ज किया जाए, यह भी आप इस इकाई के माध्यम से जानेगें। आप जानते हैं कि आकलन एवं मूल्यॉंकन हेतु अध्यापक द्वारा किए गए 'अवलोकन' पर्याप्त नहीं होंगे। अतः मूल्यॉंकन की प्रक्रिया में पठन साथी, अभिभावक व स्वयं की भूमिका के महत्व को भी दर्शाया गया है। यह इकाई आपको मूल्यॉंकन संबंधी सभी घटकों का समग्र परिचय देती है।

16.1 अधिगम उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. शैक्षिक प्रक्रियाओं में मूल्यॉंकन के महत्व से परिचित हो सकेंगे,
2. आकलन एवं मूल्यॉंकन के बीच अन्तर्निहित अन्तर को स्पष्ट कर पाएगें,
3. मूल्यॉंकन करने के लिए आवश्यक उपकरणों एवं तकनीकों की पहचान कर सकेंगे,
4. 'कार्य शिक्षा' के संदर्भ में मूल्यॉंकन की प्रक्रिया के स्वरूप के प्रति समझ बना सकेंगे,
5. 'अवलोकन' के आधार पर मूल्यॉंकन करने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे,
6. मूल्यॉंकन की प्रक्रिया से जुड़े सभी भागीदारों यथा पठन साथी, अभिभावक एवं स्वयं की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

16.2 मूल्याँकन क्या है ?

मूल्याँकन का अर्थ है किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निश्चित करना। यादि शैक्षिक संदर्भों में देखें तो मूल्याँकन का अर्थ है – शिक्षण प्रक्रिया तथा सीखने की प्रक्रियाओं से उत्पन्न अनुभावों की उपयोगिता के बारे में निर्णय देना। मूल्याँकन शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। मूल्याँकन की प्रक्रिया शिक्षण में मार्गदर्शन के कार्य को सरल बनाती है। किसी भी शिक्षण का मूल्य इस बात से आँकना चाहिए कि विद्यार्थी में किस प्रकार के व्यवहार परिवर्तन हुए हैं तथा किस प्रकार से ये व्यवहार परिवर्तन अभीष्ट शैक्षिक लक्ष्यों के अनुकूल है। शिक्षण व आकलन (कई माध्यमों से) साथ–साथ चले, यही शिक्षा में मूल्याँकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी तथा शिक्षा के अन्य सभी पक्षों की पारस्परिक निर्भरता तथा उनकी उपादेयता की जाँच होती है। इसके अन्तर्गत शिक्षार्थी की उपलब्धि के आधार पर केवल शिक्षार्थी की ही जाँच नहीं होती बल्कि शिक्षक, शिक्षण पद्धति, पाठ्यपुस्तक, अन्य शैक्षणिक साधनों और समुदाय के सहयोग की भी जाँच होती है और शिक्षण क्रिया को शिक्षार्थी की दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी बनाने की कोशिश की जाती है।

शिक्षण प्रक्रिया का केन्द्र बिंदु विद्यार्थी है। उसकी आवश्यकताओं, रुचियों तथा रुझानों को ध्यान में रखकर शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। शिक्षक पाठ्य–वस्तु का विश्ले ाण एवं प्रस्तुतीकरण शिक्षार्थी को केन्द्र मानकर करते हैं। शिक्षण द्वारा विद्यार्थी में कुछ ऐसे अनुभव उत्पन्न किए जाते हैं जो वांछनीय व्यवहार परिवर्तन के अनुकूल होते हैं। शैक्षिक मूल्याँकन में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता है कि शिक्षण इस दृष्टि से कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है।

क्विलेन तथा हन्ना के मतानुसार –

"विद्यालय द्वारा हुए शिक्षार्थी के व्यवहार परिवर्तन के विषय में साक्ष्यों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्याँकन है।"

इन परिभाषाओं पर ध्यानपूर्वक विचार करने से मूल्याँकन के संबंध में यह बात स्पष्ट होती है कि मूल्याँकन एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है। रॉस तथा स्टेनले ने कहा है कि 'यह निर्णय शिक्षण के प्रत्येक स्तर पर परिपक्व होना चाहिए।'

मूल्याँकन प्रक्रिया द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जाता है–

- कक्षा एवं विद्यालय में जो सीखने के अनुभव उत्पन्न किए, उनकी प्रभावोत्पादकता,
- निश्चित किए गए उद्देश्यों की प्राप्ति किस स्तर तक,
- उद्देश्य प्राप्त करने की प्रक्रिया

शैक्षणिक उद्देश्य, सीखने से उत्पन्न अनुभव और उसके अनुसार होने वाले व्यवहार परिवर्तन में घनिष्ठ संबंध हैं। विद्यार्थी के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावात्मक पक्षों में

टिप्पणी

सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए अनेक प्रकार की अनुभव स्थितियां उत्पन्न की जाती है जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की ओर विशेष प्रक्रिया द्वारा संकेत करती है। इस पारस्परिक संबंध को दिए गए रेखा चित्र द्वारा समझा जा सकता है –

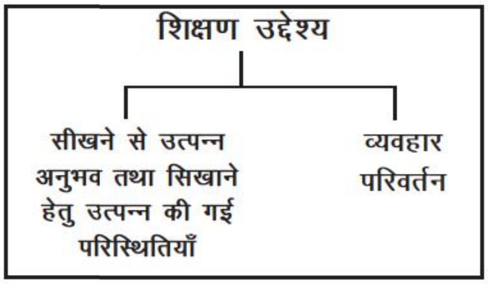

सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थी भाग ले रहे हैं या नहीं यह उनके व्यवहार से परिलक्षित होता है। उनके सोचने, विचार करने का तरीका, कार्य पद्धति भावनाएँ, रुचि, अभिव त्ति यह सभी व्यवहार परिवर्तन के लिए आधार प्रदान करते हैं। यह परिवर्तन मात्र बाह्य नहीं होता अपितु आंतरिक अधिक होता है। बाह्य परिवर्तन में विद्यार्थी की आदतें, कार्य शैली व आचरण शामिल है तथा आन्तरिक में विद्यार्थी के ज्ञान–क्षेत्र में विस्तार, बोध शक्ति का विकास, निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मक व समालोचनात्मक सोच शामिल है।

16.2.1 आकलन और मूल्याँकन

इस इकाई के आरंभ से मुख्यतः दो शब्द का प्रयोग किया जा रहा है आकलन एवं मूल्याँकन। क्या आपको आकलन एवं मूल्याँकन समानर्थी शब्द लग रहे हैं? एक जैसा भाव देने पर भी इन दोनों शब्दों में पर्याप्त अंतर विद्यमान है। मूल्याँकन जहां व्यक्ति के समस्त विचार, दृ टकोण, व्यवहार, आकांक्षओं और समझ से संबंध रखता है, वही आकलन मापन या व्यवहारिक रूप से दर्ज किए जाने योग्य परिवर्तनों तक व्याप्त है। आकलन के अन्तर्गत हम एक निश्चित समय में निश्चित घटकों की जांच –पड़ताल कर रहे हैं जबकि मूल्याँकन के अन्तर्गत हम भिन्न–भिन्न समयों पर भिन्न–भिन्न घटकों के किए गए आकलन को आधार बनाते हैं।

इस तरह आप कह सकते हैं कि मूल्याँकन आकलन से व्यापक है। शैक्षिक जगत में सामान्यतः आकलन और मूल्याँकन को लगभग समान प्रक्रियाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

प्रगति जाँच -1

1. दैनिक जीवन से कोई उदाहरण लेकर बताइए कि मूल्याँकन किस तरह आपके जीवन का अभिन्न अंग है ?

   ....

   ....

   ....

2. आकलन और मूल्याँकन के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

   ....

टिप्पणी

....

....

16.2.2 सतत् और सारगर्भित मूल्याँकन

कार्य शिक्षा कार्यक्रम में मूल्याँकन प्रोत्साहन का सशक्त साधन है। मूल्याँकन प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों में कार्य के प्रति, ज्ञान प्राप्ति और सीखने के प्रति विशेष ललक उत्पन्न हो, वे कार्य प्रक्रियाओं से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित हों। यहाँ पर मूल्याँकन का उद्‌देश्य यह घोषित करना नहीं है कि अमुक विद्यार्थी सफल है अथवा असफल, उत्क भट श्रेणी का है अथवा मध्य या निम्न अपितु शिक्षार्थी को यह बतलाना है कि 'आप किस प्रकार से सीख रहे हैं, आपको सीखने की प्रक्रिया में कहां पुनर्बलन देना है, कहां सुधार करना है आदि क्योंकि कार्य शिक्षा कार्यक्रम का केन्द्र बिंदु बच्चों में जीवनोपयोगी जीवन कौशलों, सामाजिक रूप से वांछनीय गुणों व रुचियों –अभिरुचियों का विकास करना है जिससे वह जीवन में तेजी से घटित हो रहे परिवर्तनों से जूझने के लिए तैयार हो सके, रचनात्मक तरीके से जीवन जी सके और 'मानव' होने की गरिमा का अहसास कर सकें।

कार्य कलाप के मूल्याँकन के लिए अंकों की अपेक्षा ग्रेड देना अधिक उपयुक्त माना जाता है और यह भी अपेक्षा की जाती है कि विषय अध्यापक द्वारा आन्तरिक रूप से ही मूल्याँकन किया जाए। विषय अध्यापक/अध्यापिकाएँ विद्यालय के अन्य अध्यापकों, कर्मचारियों और समुदाय के लोगों का दृष्टिकोण भी मूल्याँकन प्रक्रिया के समय ध्यान रखें। मूल्यांकन के विशिष्ट बिंदु इस प्रकार हैं–

- मूल्याँकन का परिणाम विद्यार्थी के प्रगति पत्र पर प्रदर्शित किया जाए;
- मूल्याँकन की प्रक्रिया में सैद्धान्तिक व क्रियात्मक पक्षों को एकीक त रूप से लिया जाए परन्तु साथ ही वास्तविक प्रायोगिक कार्य के मूल्याँकन पर अधिक बल दिया जाए;
- ज्ञान और कौशल के समेकन पर बल दिया जाए;
- सीखने की प्रक्रिया की तरह मूल्याँकन की प्रक्रिया भी आनंदमयी हो।
- मूल्याँकन विकासात्मक हों और उसका निरंतरता तथा व्यापकता पर पर्याप्त जोर रहे।
- बच्चों की गतिविधियों में भागीदारी के अवलोकन को मूल्याँकन का मुख्य आधार बनाया जाए। अवलोकन के साथ–साथ मौखिक प्रश्नोत्तर तकनीक भी उपयोग में लाई जा सकती है।
- कार्यकलापों में विद्यार्थियों की प्रवीणता सुनिश्चित करने के लिए मूल्याँकन निदानात्मक व उपचारात्मक प्रक ति का होना चाहिए।
- यद्यपि आंतरिक रूप से किए जाने वाले मूल्याँकन का ही प्रावधान हो परन्तु

टिप्पणी

विद्यार्थियों के परिपक्वता स्तर को देखते हुए बाह्य मूल्यॉंकन की पद्धति को अपनाया जा सकता है। इस अवस्था में यह ध्यान रखा जाए कि बाहर से आने वाले मूल्यॉंकनकर्ता विद्यालय की स्थितियों, विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर और कार्यकलापों के निर्धारित उद्देश्यों से भली–भांति परिचित हों।

- मूल्यॉंकन के परिणाम स्तर संपोषण करने वाले हो, न कि विद्यार्थी में निराशा के भाव लाने वाले।
- विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए मूल्यॉंकन प्रक्रिया में यदि परिवर्तन अपेक्षित है तो अवश्य करना चाहिए। दया या सहानुभूति जैसे भावों की अपेक्षा प्रेरणा व प्रोत्साहन जैसे भावों को आधार बनाना चाहिए।
- आवश्यकतानुसार मूल्यॉंकन प्रक्रिया में आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से संकोच न किया जाए।
- स्व मूल्यॉंकन, साथियों तथा समुदाय (विशेषकर अभिभावक व संपर्क में आने वाले अन्य व्यक्ति) द्वारा मूल्यॉंकन को भी मूल्यॉंकन प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है।
- मंद, औसत और तीव्र गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए भिन्न–भिन्न युक्तियों का उपयोग किया जाए।

अंततः शिक्षार्थियों की क्षमताएँ, संसाधनों की उपलब्धता, आरंभिक व्यवहार, विद्यालयी पर्यावरण, प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य, विषयवस्तु की प्रक ति और शिक्षकों द्वारा दिए जाने वाले प्रोत्साहन को भी मूल्यॉंकन के समय ध्यान में रखा जाए।

प्रगति जॉंच -2

1. कार्य शिक्षा के अन्तर्गत मूल्यॉंकन की प्रक्रिया अन्य विषयों की प्रक्रिया से किस प्रकार भिन्न है, उदाहरण देकर अपने विचार लिखें।

....

....

....

16.3 मूल्यॉंकन के उपकरण एवं प्रविधियाँ (तकनीकें)

क्या आपने कभी विचार किया है कि परीक्षा के अतिरिक्त बच्चों के बारे में आप किस प्रकार सूचनाएं और उनके विकास के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है ? भले ही आपने इस बारे में पहले कभी विचार न किया हो, लेकिन अपने शिक्षक जीवन में आपने इन अनेक तरीकों में से कुछ का प्रयोग अवश्य किया होगा।

टिप्पणी

आकलन के तरीके

आकलन करने के चार मूलभूत तरीके हैं –

- **व्यक्तिगत आकलन** – जब कोई एक बच्चा कोई गतिविधि करता है, तब उसको केन्द्र में रखकर किया गया आकलन।
- **सामूहिक आकलन** – कक्षा के सभी बच्चों का या समूह में मौजूद सभी बच्चों के कार्य, व्यवहार, सहयोग आदि का आकलन, समूह में किया जाता है।
- **स्व–आकलन** – बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने से संबंधित उसके द्वारा स्वयं की जांच।
- **सहपाठियों द्वारा आकलन** – कक्षा में बच्चे एक दूसरे के कार्यों का अवलोकन करते हैं और समय–समय पर उस पर टीका टिप्पणी भी करते हैं। सहपाठियों द्वारा किया गया आकलन सीखने की प्रक्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आकलन के उपकरण और तकनीक

- अवलोकन
- साक्षात्कार
- जाँच सूची
- संचयी अभिलेख
- प्रश्न अनुसूची
- छायाचित्र/पोर्टफोलियो
- परियोजना कार्य
- प्रतियोगिताएँ
- गतिविधियाँ
- समूह वर्ग
- परीक्षा
- प्रश्न मंच
- वाद–विवाद
- व्याख्यान
- रेटिंग स्केल

- चैकलिस्ट
- प्रदत्त कार्य

उपर्युक्त सूची को देखकर आप समझ गए होंगे कि सतत् और सारगर्भित मूल्याँकन कितने विविध तरीकों से किया जा सकता है। आइए, अब इनमें से कुछ मुख्य उपकरणों और तकनीकों के बारे में बातचीत करें–

16.3.1 अवलोकन

अवलोकन बच्चों के बारे में जानकारी जुटाने का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है। बच्चों का अवलोकन प्राक तिक परिवेश में ही करना चाहिए। अवलोकन द्वारा व्यक्तित्व के विकास के बहुत से पहलुओं का अवलोकन किया जा सकता है। अवलोकन कक्षा के अंदर या बाहर किसी भी स्थान और समय पर किया जा सकता है। यह सामूहिक और व्यक्तिगत, दोनों तरीकों से किया जा सकता है।

आप अवलोकन द्वारा बच्चों का व्यवहार, रुचियों, चुनौतियों आदि के बारे में जान सकते हैं। अवलोकन के दौरान किए गए प्रेक्षणों को टिप्पणियों के रूप में तुरंत दर्ज कर लेना चाहिए अन्यथा अवलोकन की प्रामाणिकता नष्ट हो सकती है।

प्रगति जाँच -3

1. आप अपने विद्यार्थी का 'जिल्द साजी' की कार्यशाला में अवलोकन कर रहे हैं। किन–किन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अवलोकन करेंगे, विस्त त सूची तैयार करें।

....

....

....

16.3.2 साक्षात्कार

आपने अब तक अनेक साक्षात्कार देखे–पढ़े होंगे। साक्षात्कार बच्चों के व्यवहार, दृष्टिकोण, उपलब्धियों, आकांक्षाओं और समस्याओं को जानने का महत्वपूर्ण तरीका है। साक्षात्कार व्यक्तिगत ही होना चाहिए ताकि बच्चे निःसंकोच उत्तर दे सकें। साक्षात्कार हेतु पहले से तैयारी कर लेनी चाहिए और प्रश्न और साक्षात्कार के उद्देश्यों की पहचान कर लेनी चाहिए। साक्षात्कार बच्चे के लिए मित्रों का भी किया जा सकता है और अभिभावकों का भी। इस प्रकार बच्चे के बारे में अतिरिक्त जानकारियां प्राप्त हो सकती हैं।

16.3.3 जाँच सूची

किसी खास व्यवहार/क्रिया के बारे में सुव्यवस्थित तरीके से दर्ज किए गए उल्लेख जाँच

टिप्पणी

सूची कहे जा सकते हैं। ये बच्चे के व्यक्तित्व के किसी विशेष पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करने में मदद करती है।

जाँच सूची को शीघ्र और आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है। इसके द्वारा बच्चों की प्रतिक्रियाओं या उत्तरों के बारे में नहीं जाना जा सकता। यदि जाँच सूची बनाते समय उसमें 'टिप्पणी' का कॉलम जोड़ दिया जाए तो इस कमी को दूर किया जा सकता है।

प्रगति जाँच -4

1. कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों में रूचि के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए लघु–जांच सूची बनाइए।

   ....

   ....

   ....

16.3.4 संचयी अभिलेख

यदि आप 'संचयी' और 'अभिलेख' शब्दों का अर्थ जानते हैं तो समझ चुके होंगे कि 'संचयी अभिलेख' किसे कहते हैं। संचयी अभिलेख बच्चों के जीवन में हुई महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णनात्मक रिकार्ड प्रस्तुत करते हैं। इन घटनाओं को अवलोकन द्वारा जाना जाता है। इनसे आप बच्चे के सामाजिक, भावात्मक, पसंद, नापसंद और संबंधों के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। इन सूचनाओं की मदद से बच्चे के जीवन की घटनाएं समझने और उनके व्यवहार के कारणों का पता करने में मदद मिलती है।

आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि संचयी अभिलेख अत्यंत बड़े पैमाने का कार्य साबित हो सकता है। कक्षा में हर रोज होने वाली प्रत्येक घटना का रिकार्ड रखना असंभव कार्य है अतः कुछ ही घटनाओं को दर्ज करना संभव हो पाता है। प्रयास करें कि घटना के तुरंत बाद उसे दर्ज कर लें ताकि उसके बारे में सही विवरण लिखे जा सकें।

16.3.5 प्रश्न अनुसूची

प्रश्न अनुसूची प्रश्नों की एक सूची होती है जिसे विद्यार्थी स्वयं या अध्यापक के साथ पूरा करते हैं। इसके द्वारा किसी विषय विशेष के बारे में विद्यार्थी की प्रतिक्रिया को रिकार्ड किया जाता है। इसे व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों तरीकों से व्यवहार में लाया जा सकता है।

इस उपकरण को उपयोग में लाने से पूर्व उद्देश्यों और प्रश्नों की अच्छी तरह पहचान कर लेनी चाहिए। विद्यार्थी को विश्वास दिलाना आवश्यक है कि उसके उत्तरों को गोपनीय रखा जाएगा और उनका दुरुपयोग नहीं किया जाएगा। प्रश्नों की भाषा स्वतः स्पष्ट होनी चाहिए। अपमानजनक, द्विअर्थी और असहज कर देने वाले प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए।

टिप्पणी

16.3.6 छायाचित्र/पोर्टफोलियो

पोर्टफोलियो एक निश्चित समयावधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह होता है। ये रोजमर्रा के कार्य भी हो सकते हैं और बच्चे द्वारा किए गए कार्य के उत्क भट नमूने भी हो सकते हैं। कसी समारोह में किए गए प्रदर्शन हेतु बनाई गई वस्तुओं के फोटोग्राफ पोर्टफोलियो को और अधिक समृद्ध कर सकते हैं।

पोर्टफोलियो किसी विद्यार्थी के क्रमिक विकास का सबसे प्राथमिक रिकार्ड उपलब्ध करवाते हैं। किसी वर्ष के दो महीनों के कार्य के नमूने देखकर विद्यार्थी के विकास का सटीक प्रमाण प्राप्त हो जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थी स्वयं अपनी प्रगति का अवलोकन कर पाते है।

आपको पोर्टफोलियो का निर्माण करते समय कुछ मुख्य बातें ध्यान में रखनी होगीं। पोर्टफोलियो में कुछ रिकार्ड सम्मिलित करने से पूर्व उसके औचित्य पर विचार कर लें। सभी कागज/वस्तुएं शामिल करने से पोर्टफोलियो निरर्थक बनकर रह जाएगा। पोर्टफोलियो निर्माण में विद्यार्थी को सहयात्री बनाएं। उसको क्रमसूची, लेबल, तिथि आदि के अनुसार व्यवस्थित रखें ताकि किसी विशिष्ट सूचना को जब आवश्यकता हो, तुरंत प्राप्त किया जा सके। संभव हो तो प्रत्येक पृष्ठ पर टिप्पणियाँ लिखें और तिथि दर्ज करें।

प्रगति जाँच -5

1. पोर्टफोलियो से आपका क्या तात्पर्य है ? पोर्टफोलियो आकलन की प्रक्रिया में किस प्रकार से लाभदायक है ?

   ....

   ....

   ....

16.3.7 परियोजना कार्य

परियोजना वे कार्य होते हैं जिन्हें विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से करने को दिया जाता है। परियोजनाओं के माध्यम से आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण करवाया जाता है। एक शैक्षिक सत्र में एकाधिक परियोजनाएं करवाई जा सकती है।

परियोजनाएं हाथ से काम करने, खोजबीन करने, संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या और सामान्यीकरण करने के दुर्लभ अवसर उपलब्ध करवाती है। इनके द्वारा कक्षा को जीवन से जोड़ने और एक दूसरे से सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

आप जब अपने विद्यार्थियों के लिए परियोजनाओं का चयन करेंगे तो कुछ बातों को ध्यान में रखें। परियोजनाएं बच्चों के स्तर के अनुसार हो, अत्याधिक सरल या कठिन न हो।

सामूहिक परियोजनाओं पर अधिक बल दें और परियोजनाओं के चयन में विद्यार्थियों को भागीदार बनाएं। परियोजनाओं के लिए सामग्री घर या आपपास से प्राप्त हो जाए और बच्चों पर आर्थिक बोझा न डालें, इस बात का विशेष ध्यान रखें।

परियोजनाओं का व्यवस्थित रिकार्ड भी रखा जाना चाहिए। संभव हो तो विद्यालय में एक संसाधन केन्द्र बना ले जिसमें परियोजनाओं का संग्रह किया जा सके।

प्रगति जाँच -6

1. अपने विद्यालय की परिस्थितियों व विद्यार्थियों के रूझानों को दृष्टि में रखते हुए कार्य शिक्षा हेतु कक्षा 6, 7 व 8 के लिए दो–दो परियोजनाओं की सूची बनाएं। यह भी बताएं कि ये परियोजनाएं किस माह में करवाई जाएगी और उनके क्या उद्देश्य होंगे।

....

....

....

16.4 आकलन में पठन साथी की भूमिका

सतत् एवं सारगर्भित मूल्याँकन विद्यार्थी की प्रगति को संपूर्ण दृष्टि से देखता है। जिस प्रकार से यह भिन्न–भिन्न तकनीकों तथा उपकरणों के प्रयोग को महत्व देता है, उसी प्रकार से यह मूल्याँकनकर्ताओं में भी विभिन्नता की माँग करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मूल्याँकन के लिए अध्यापक के साथ–साथ और लोगों से भी अपेक्षा करता है कि वे विद्यार्थी के आकलन व मूल्याँकन की प्रक्रिया में अपने विचार बिंदुओं से अवगत करवाएं और प्रति पुष्टि देने का कार्य करें।

यहाँ पर 'और लोगों' में विद्यार्थियों के सहपाठियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। इस इकाई में पहले भी सहपाठियों या पठन साथी की भूमिका पर चर्चा की जा चुकी है।

आम तौर पर आपने देखा होगा कि सीखने की प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी अपने साथियों से अपने कार्य के बारे में तरह–तरह के सवाल करते हैं –

- ''सुरभि, जरा बताना तो मैंने ये रंग सही भरा है या नहीं, क्या कोई और रंग लगा लूँ तो ज्यादा आक   िक नजर आएगा ?''
- ''जरा देखकर तो बताओ कि इस कठपुतली के कान सही जगह लगे हैं या नहीं ? गत्ते की जगह क्या कपड़े की कतरनों से कान बना लूँ ?''
- ''मनु, देखो तो सही। मैंने मिट्टी को भुरभुरा करने की पूरी कोशिश की है। क्या और भुरभुरा बनाया जाए।''

आपने इस सवालों पर गौर किया होगा। यहाँ विद्यार्थी अपने साथियों से अपने कार्य का आकलन करवाने की चेष्टा कर रहे हैं। कक्षा में कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी आती हैं जब विद्यार्थी अपने साथियों को उनके काम के बारे में अपनी टिप्पणियों से अवगत करवाते हैं। उदाहरण स्वरूप –

- ''सिद्धार्थ, मुखौटा तो तुमने बहुत ही सुंदर बनाया है मगर यह टिकाऊ नहीं है। अगर चार्ट पेपर की जगह तुमने कार्टरशीट लगायी होती तो यह अधिक दिन तक उपयोग में लाया जा सकता था।''
- ''बाँधनी का दुपट्टा तो निखर कर आया है पर तुमने इतने बड़े–बड़े दाने क्यों बांधे ? इससे दुपट्टे में कहीं–कहीं खालीपन नजर आ रहा है।''
- अरे! तुम खाँचे में सीधे ही मोम क्यों डाल रहे हो ? थोड़ा सा सरसों का तेल रूई में भिगोकर खांचों पर लगा लो तो मोमबत्ती निकालने में परेशानी नहीं होगी।

उपर्युक्त टिप्पणियों के आधार पर आप क्या अनुमान लगा रहे हैं ? आपका अनुमान सही है। यहाँ पर सहपाठी एक–दूसरे का अनौपचारिक रूप से आकलन कर रहे हैं और कार्य के बेहतर निष्पादन के लिए सुझाव भी दे रहे हैं। सहपाठियों की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का आकलन करने की प्रक्रिया में समुचित लाभ उठाइए। ऐसा करने के लिए आपको निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा –

1. पठन साथी आकलन की समुचित योजना तैयार करें जैसे–
   - किस गतिविधि में पठन साथी की टिप्पणियाँ लेनी चाहिए।
   - उनके द्वारा दी गई टिप्पणियों की क्या विश्वसनीयता होगी ?
   - कौन से साथी किस विद्यार्थी के बारे में बेहतर व नि पक्ष टिप्पणी दे सकते हैं?
2. पठन साथियों द्वारा दी गई टिप्पणियों को ज्यों का त्यों दर्ज करें और उनके सम्मुख किसी भी प्रकार की स्वयं की टिप्पणी न दें।
3. यदि आपको यह आभास होता है कि सहपाठियों की आपस में किसी प्रकार की अनबन है तो उनके विचार शामिल करने से पहले विचार अवश्य करिए। संभवतयाः ऐसे साथी पूर्वग्रहों के आधार पर टिप्पणी देंगे जिनकी नि पक्षता पर प्रश्न चिन्ह लग सकता है।

16.5 आकलन में अभिभावकों की भूमिका

पाठ्यक्रम में बहुत से क्रियाकलाप एवं खेल आदि हैं जो बच्चों के माता–पिता द्वारा करवाए जा सकते हैं। भाषा, सामाजिक अध्ययन, कला के अंतर्गत बहुत सी विषय–वस्तु को सभी तो नहीं पर कुछ बच्चों के माता–पिता अवश्य ही करवा पाने में सक्षम होंगे तथा करवाने में

टिप्पणी

गौरव का अनुभव भी करेंगे। माता–पिता का पढ़ा–लिखा होना जरूरी नहीं है। अनपढ़ माता–पिता भी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सहयोग दे सकते हैं। गाँव के बड़े–बूढ़े बच्चों को ऐतिहासिक एवं गाँव की छोटी से बड़ी बात बताने में सक्षम हैं। ऐसे ही गाँव के मिस्त्री, कुम्हार, बढ़ई तथा अन्य कारीगर बच्चों को छोटे से छोटा व बड़े से बड़ा कार्य तथा सुंदर वस्तुएं बनाने का आनंद बच्चों को प्राप्त करा सकते हैं। मिट्टी के खिलौने बनाने, स्थानीय परिवेश से भली–भाँति जानकारी देने का कार्य, बस्ती/ गाँव/शहर के बड़े–बूढ़ों से अच्छा और कौन सा स्रोत हो सकता है?

- आप बच्चों को भ्रमण पर ले जाना चाहते हैं। अकेले ले जाने में कठिनाई महसूस करते हैं। ऐसे में क्या आप भ्रमण को स्थगित कर देंगे या फिर किसी अभिभावक का सहयोग आमंत्रित करना पसंद करेंगे।
- स्थानीय परिवेश में बहुत–से ऐसे पेड़–पौधे हैं जिनकी आपको पहचान नहीं, शायद और शिक्षकों को भी नहीं। आप कक्षा में बच्चों से जानकारी लेने में हिचकिचाएँ नहीं कि किसके माता–पिता हमें वनस्पति जगत से अवगत करा सकते हैं।
- किसी प्रकार से आप यह जान गए हैं कि अमुक बच्चे के माता–पिता/भाई–बहन या अन्य रिश्तेदार सरल यौगिक क्रियाओं में निपुण हैं। आप उनका सहयोग ले सकते हैं।
- मेले–त्यौहार आदि के आयोजन में तो अभिभावकों की भूमिका की कोई सीमा ही नहीं है। सामाजिक प भठभूमि को ध्यान में रखते हुए आप उनकी भूमिका एवं सहयोग के क्षेत्र व सीमाएं तय कर सकते हैं।

प्रगति जाँच -7

1. कार्य शिक्षा संबंधी गतिविधियों में पठन साथी की भूमिका पर अपने विचार लिखिए।

   ....

   ....

   ....

2. 'निरक्षर अभिभावक आकलन की भूमिका में अपना सहयोग नहीं दे सकते'' इस कथन से आप कहां तक सहमत/असहमत हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

16.6 विद्यार्थियों और अभिभावकों को प्रगति कैसे संप्रेषित की जाए

विद्यार्थियों और अभिभावकों को उनकी प्रगति के बारे में बताना बहुत जरूरी है। यदि आपको आकलन के उद्देश्य स्मरण हैं तो आप समक्ष सकते हैं कि जब तक आकलन के परिणामों को बच्चों और उनके अभिभावकों तक संप्रेषित नहीं किया जाएगा, तब तक आकलन के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकेगी।

विद्यार्थियों और अभिभावकों को प्रगति के बारे में बताने के कुछ कारण निम्नलिखित है–

- अभिभावकों को बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष उपलब्धियों, जरूरतों, व्यवहार आदि के बारे में बताना।
- सीखने की उपयुक्त स्थितियों और तरीकों की योजना बनाना।
- बच्चे की रुचि, क्षमताओं, दृष्टिकोण आदि की पहचान करने में उसकी और उसके अभिभावकों की मदद करना।
- अभिभावकों और बच्चों को स्व आकलन के लिए प्रोत्साहित करना।
- आकलन की प्रक्रिया के प्रति भय को समाप्त करना।

16.6.1 संप्रेषण के तरीके

परंपरागत रूप से बच्चों के बारे में जो सूचना अभिभावकों को विद्यालय की ओर से मिलती है, उसे क्या कहते हैं ? आपने ठीक पहचाना उसे रिर्पोट कार्ड या प्रगति दर्पण कहते हैं। प्रगति दर्पण में वर्ष में तीन बार होने वाली परीक्षाओं में बच्चे ने कितने अंक प्राप्त किए है, इसका अंकन होता है। कहीं–कहीं रिपोर्ट कार्ड में बच्चे की हाजरी और उनके आचरण, स्वच्छता आदि के बारे में टिप्पणियाँ भी लिख दी जाती है। क्या इतना भर पर्याप्त है ?

चूंकि सतत् एवं सारगर्भित मूल्यांकन हर समय चलने वाली प्रक्रिया है अतः इसको अभिभावकों तक पहुंचाने के तरीके भी विविधता लिए हुए होंगे। आमतौर पर सभी अभिभावक जानना चाहते हैं कि उनके बच्चे विद्यालय में क्या कुछ कर रहे हैं और क्या सीख रहे हैं। दूसरे बच्चे किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं और उनके बच्चे का प्रदर्शन उनसे किस तरह भिन्न है। शिक्षक आमतौर पर "अच्छा, बहुत अच्छा, और मेहनत की जरूरत है" जैसी टिप्पणियाँ कर देते हैं। क्या आप इसे पर्याप्त मानते हैं ?

जहाँ तक संभव हो, आप अभिभावकों को स्पष्ट भाषा में, समझ में आने वाले शब्दों / वाक्यों में बच्चे के बारे में बताएं।

❖ बच्चा क्या क्या कर सकता है ? क्या करना चाहता है ? क्या कुछ करने में कठिनाई है ?

टिप्पणी

- बच्चे ने किस तरह सीखा (प्रक्रिया)
- बच्चे द्वारा किए गए कार्यों के नमूने दिखांए
- सहयोग, उत्तरदायित्व, पहलकदमी, संवेदनशीलता, रुचि आदि के बारे में में बात करें।
- अभिभावक किस तरह बच्चों की मदद कर सकते हैं, इस बारे में सुझाव देना।
- अभिभावकों से बच्चे के घर के जीवन, कार्यों और व्यवहार के बारे में पूछना।

16.6.2 संप्रेषण के बिंदु

अभिभावकों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रगति संप्रेि ात करे :–

विद्यार्थी का नाम :

विभाग :

कार्यकलाप का नाम :

- कार्य में प्रयुक्त समय (विद्यार्थी द्वारा)
- कार्य में प्रयुक्त औजारों की उपयुक्तता
- कार्य में प्रयुक्त सामग्री की उपयुक्तता
- अपनाई गई तकनीक या विधि
- बनाई गई वस्तु के उपयोग
- आधारभूत वैज्ञानिक सिद्धांत
- समूह में सहयोग
- कार्य के प्रति तत्परता
- सुरक्षित तरीके से कार्य करने की ौली;
- कार्यस्थल की व्यवस्था
- उत्पाद का प्रस्तुतीकरण

यदि कार्यकलाप की प्रक ति 'उत्पाद' बनाने की प्रक्रिया न होकर 'सेवा' पर आधारित है तो मुख्यतः मूल्यों व दृष्टिकोण संबंधी बिंदुओं पर ध्यान देना होगा।

16.7 सारांश

मूल्यॉकन की प्रक्रिया सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह प्रक्रिया समूचे

टिप्पणी

पाठ्यक्रम में सतत रूप से चलनी चाहिए। मूल्याँकन का पारंपरिक स्वरूप इसकी सतत और व्यापक प्रवृत्ति की अनदेखा करता था। आपको स्वयं भी इस पक्ष के अनुभव होंगें कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया की जाँच करने के लिए सावधिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती थी और उनमें भी पूरी तरह से निर्भरता लिखित परीक्षाओं पर ही रहती थी। समय के साथ मूल्याँकन के स्वरूप में परिवर्तन हुए हैं। अब इसे सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है और यह भी ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी से जुड़े सभी आयामों के विकास व आकलन पर बल दिया जाए। संज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ सह संज्ञानात्मक पक्षों को भी महत्वपूर्ण माना गया है। एक और महत्वपूर्ण तथ्य उल्लेखनीय है कि एक तकनीक व उपकरण की अपेक्षा कई तकनीकों को आकलन का माध्यम बनाया जाता है। उदाहरण के तौर पर एक ही विद्यार्थी के लिए जहाँ एक ओर 'अवलोकन' के आधार पर आकलन किया जाता है तो दूसरी ओर उसके द्वारा बनाए गए उत्पाद से संबंधित प्र न पूछकर, परियोजना में उसकी संलग्नता के आधार पर उसके पोर्टफोलियो को माध्यम बनाकर भी उसकी प्रगति व उपलब्धि स्तर से जुड़े तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रस्तुत इकाई के माध्यम से आपने आकलन के वर्तमान स्वरूप के प्रति स्पश्ट समझ बनाई। आपने यह जाना कि आकलन और मूल्याँकन समानार्थी भाब्द न होकर एक दूसरे के पूरक है। व्यापक मूल्यांकन हेतु हमें सतत् रूप से आकलन की प्रक्रिया से जुड़े रहना होगा। आपने जाना कि मूल्याँकन की प्रक्रिया में शिक्षक के साथ–साथ पठन–साथी अभिभावकों और स्वयं विद्यार्थी को भी भागीदार बनाना अनिवार्य है। अन्ततः आपने इस बारे में समझ बनाई कि मात्र आकलन व मूल्याँकन कर लेना पर्याप्त नहीं होगा अपितु समयानुसार विद्यार्थी व अभिभावकों को प्रगति के मुख्य बिंदु व्यवस्थित रूप से संप्रेशित करने चाहिए।

16.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद्, नई दिल्ली।

2. सृजन (2009) शारदा कुमारी, मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, केशवपुरम, दिल्ली

3. Source Book on Assessment for Class I – V (2008) राष्ट्रीय भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

4. Reflections on School education Vol. I I issue 1I राज्य भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

16.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मूल्याँकन को परिभाशित करते हुए आकलन व मूल्याँकन में अंतर स्पष्ट करें।

2. अपने अनुभवों के आधार पर आकलन एवं मूल्यॉंकन के वर्तमान स्वरूप की तुलना इसके पारंपरिक स्वरूप से करें? अन्तर दर्शाने के लिए कम से कम छह बिंदु अवश्य लिखे।

3. मूल्यॉंकन की प्रक्रिया में अध्यापक के साथ–साथ और कौन–कौन सम्मिलित हो सकता है और क्यों?

4. समूह मूल्यॉंकन से आप क्या समझते हैं। कार्य शिक्षा के संदर्भ में इसकी उपादेयता पर कोई पाँच बिंदु लिखो।

5. आपके विद्यार्थी कागज/पुराने अखबार से लिफ़ाफे बना रहे हैं। उनका आकलन करने के लिए आप किस विधि का चयन करेगें और क्यों?

6. कक्षा 7 विद्यालय परिसर की साजसज्जा परियोजना में संलग्न हैं। मूल्यॉंकन हेतु आप उनका अवलोकन कर रहे हैं। अवलोकन हेतु आप किन मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देंगें?